अथ श्री आमिर खान कथा 03
गांधी जी के साथ ही चला गया 'गांधी- दर्शन' 08
छात्र संघ चुनावों में खतरे की घंटी आपको सुनाई दी क्या ? 14

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

पाथेय कण

₹10

www.patheykan.com

आश्विन कृ.6, वि.2079, युगाब्द 5124, 16 सितम्बर, 2022

प्रेम संबंध के लिए तैयार नहीं हुई तो पेट्रोल डालकर जला दिया

अंकिता ने मरने से पहले कहा–
''जैसे मैं मर रही हूँ वैसे ही शाहरुख भी मरे''

प्रतीकात्मक चित्र

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

संग्रहणीय अंक

पाथेय कण के स्वराज संघर्ष यात्रा-2 विशेषांक अत्यंत उपयोगी एवं संग्रहणीय अंक है। ऐसे सुंदर अंक के प्रकाशन के लिए अत्यंत बधाई, शुभकानाएं, आभार एवं धन्यवाद।

-डॉ.विपिन पाठक, जयपुर
अ.भा.साहित्य परिषद् के क्षेत्रीय संगठन मंत्री

जानकारी युक्त

पाथेय कण का नवीनतम विशेषांक 'स्वराज संघर्ष-2' बड़ा ही अच्छा लगा। ऐसे सुंदर और महत्वपूर्ण जानकारी युक्त अंक के प्रकाशन के लिए आपको बहुत-बहुत बधाई एवं धन्यवाद।

-राज भार्गव, ए-6 'हरि सदन' महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर

संपादकीय

1 जून के अंक में सम्पादकीय से आत्मसात हुआ। सम्पादकीय में इस अटल सत्य को सरलता से उजागर किया गया अधिकांश भारतीय मुसलमानों के पूर्वज हिंदू ही हैं। मीडिया की भूमिका पर प्रश्नचिन्ह लगाया गया है जो साहसिक है। सविनय अपेक्षा है कि आगामी अंकों में मीडिया की ऐसी भूमिकाओं को जनमानस के समक्ष निरन्तर प्रस्तुत किया जावे।

- लक्ष्मीचन्द व्यास, मीरा नगर, उदयपुर

विशेष अवसर के क्रम में

उपरोक्त विषय में लेख है कि स्वराज संघर्ष यात्रा-2 विशेषांक संयुक्त अंक निकल रहा है ऐसे अंक प्रकाशित होना भी आवश्यक है, परन्तु आगामी पक्ष के विशेष अवसर भी निरन्तर आने चाहिए। अब 16 अगस्त से 15 सितम्बर,2022 के विशेष अवसर यथा महत्वपूर्ण जन्मदिन, बलिदान दिवस/पुण्यतिथि, महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर, सांस्कृतिक पर्व नहीं आ सकेंगे, यह भी आना आवश्यक है। हम इन्हें देखकर ही आम जनता, सोशल मीडिया में प्रचारित करते हैं।

- हनुमान शर्मा, 325, रंगपुर रोड कोटा जंक्शन

विशेषांक

पाथेय कण का अगस्त माह का संयुक्त अंक प्राप्त हुआ। आप द्वारा लिखे सम्पादकीय ने प्रत्येक पाठक के मन में देशभक्ति का जोश जागृत कर दिया एवं आप द्वारा जिस प्रकार बारीकी से संकलन करके प्रत्येक पाठक को ऐतिहासिक स्वराज संघर्ष यात्रा से अवगत कराया वह बिना पाथेय के संभव नहीं हो सकता था।

-गोपाल सेकडा, नया कटला, मानगंज, दौसा,

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- अनेक बंदिशों के बावजूद ऐसे शुरु हुआ निजाम के विरुद्ध जनप्रतिरोध
https://patheykan.com/?p=17233
- सीमा पर्यटन का केन्द्र बनेगा ऐतिहासिक तनोट माता मंदिर
https://patheykan.com/?p=17229
- फिल्म 'सिया' एक झकझोर देने वाली कहानी
https://patheykan.com/?p=17220

संस्कृत पत्रिका 'भारती' को किया गया सम्मानित

बीती 11 अगस्त को दिल्ली में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली ने देश की सबसे पुरानी संस्कृत पत्रिका 'भारती' को सम्मानित किया। यह सम्मान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्रीनिवास, केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री डॉ.सुभाष सरकार तथा लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली के कुलपति प्रो.मदनमोहन पाठक से पत्रिका के सम्पादक प्रो.श्रीकृष्ण शर्मा व प्रबंध संपादक श्री सुदामा शर्मा ने प्राप्त किया। सम्मान स्वरूप 'भारती' को एक लाख रुपये तथा सम्मान पत्र दिया गया। इस अवसर पर संस्कृत भारती के संगठन मंत्री श्री दिनेश कामत भी उपस्थित थे।

जानकारी हो कि 'भारती' पत्रिका जयपुर से प्रकाशित होने वाली देश की एक मात्र संस्कृत मासिक पत्रिका है जो 1950 से लगातार प्रकाशित हो रही है। आपातकाल हो या कोरोना काल ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी इसका प्रकाशन अनवरत रहा। वर्तमान में इसके प्रकाशन का 72वां वर्ष चल रहा है। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वानों की देखरेख और सम्पादन में उक्त पत्रिका ने सदैव अपनी गुणवत्ता बरकरार रखी, इन्हीं गुणवत्ताओं को देखते हुए उक्त पुरस्कार प्रदान किया गया है। संस्कृत 'भारती पत्रिका' के संस्थापक संपादक श्री गिरिराज प्रसाद शास्त्री उपाख्य 'दादाभाई' थे।

आप भी लिखिए अपनी फोटो के साथ

पाथेय कण में प्रकाशित किसी समाचार/लेख या अन्य सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया/टिप्पणी या कोई सुझाव अथवा प्रकाशित सामग्री के विषय पर अपने विचार हमें अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो के साथ व्हाट्सएप या मेल करें अथवा डाक से भेजें।

79765 82011
patheykan@gmail.com

पाक्षिक
पाथेय कण

आश्विन कृष्ण 6 से
आश्विन शुक्ल 5 तक
विक्रम संवत् 2079,
युगाब्द 5124

16-30 सित., 2022
वर्ष : 38
अंक : 11

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राज.)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने की शिकायत हेतु सम्पर्क
(प्रातः10 से सायं 5 बजे तक)
सुरेश शर्मा
9413645211
विज्ञापन हेतु सम्पर्क
ओमप्रकाश
9929722111

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

अथ श्री आमिर खान कथा

बहिष्कार किया जाना फिल्म लाल सिंह चड्ढा का

भारतीय फिल्म जगत में आमिर खान की प्रसिद्धि 'मिस्टर परफेक्शनिस्ट' की है। वे एक बेहतरीन अभिनेता हैं तथा अपनी फिल्मों पर पर्याप्त परिश्रम करने के लिए जाने जाते हैं। बताया जाता है कि फिल्म लाल सिंह चड्ढा पर भी उन्होंने 4 वर्ष तक मेहनत की थी। फिर इस फिल्म का आम दर्शकों ने बहिष्कार क्यों किया? बात कुछ वर्ष पहले से शुरू करनी होगी।

आमिर खान पर अपने सीरियल 'सत्यमेव जयते' में हिंदू त्योहारों और परंपराओं का मजाक बनाने के आरोप हैं। एक एपिसोड कहने के लिए 'लैंगिक असमानता' या 'घरेलू हिंसा' के विरुद्ध बनाया गया था। इसकी भूमिका में प्रश्न किया गया था कि पुरुष अपनी पत्नियों को क्यों पीटते हैं? इस प्रश्न पर आमिर के सामने बैठी महिला ने इसका कारण 'रक्षाबंधन' और 'करवा चौथ' जैसे त्योहार बताकर दोनों त्योहारों का भरपूर मजाक बनाया। उस महिला (कमला भसीन) ने कहा-''राखी पर भाई खड़ा हो जाता है बड़ा बनकर, भले ही मैं उसको पढ़ा रही हूँ, परन्तु वह कहता है कि मैं तेरी रक्षा करूँगा। अरे, तेरी रक्षा मैं पन्द्रह साल से कर रही हूँ, तब से कर रही हूँ जब तेरी नाक बहती थी।''

इस बात पर वहां उपस्थित दर्शक-श्रोता हंसते हैं, आमिर भी हंसते हैं, जैसे कह रहे हों कि सच में रक्षाबंधन बड़ा वाहियात त्योहार है। कमला भसीन आगे कहती हैं-

''मगर राखी पर मुझे लाकर फिर वहीं खड़ा कर दिया जाएगा कि तू नीचे है, तेरी रक्षा यही करेगा।''

कमला भसीन घरेलू हिंसा का एक और कारण बताती हैं- करवा चौथ। वह कहती हैं-

''इस संबंध में एक बड़ा अच्छा उदाहरण है करवा चौथ का त्योहार। करवा चौथ औरत रखती है ताकि उसके पति को कुछ न हो जाए, उसे लंबी उम्र लगे। अगर यही सोच सही है तो भई, अमेरिका के सब पतियों को तो मर ही जाना चाहिए क्योंकि उनकी पत्नियों ने करवा चौथ नहीं रखा।'

कमला भसीन के इस कथन पर आमिर खान फिर हंसते हैं, मानो कह रहे हो, देखो कितनी मूर्खतापूर्ण परम्परा है- करवा चौथ। आमिर को हंसते देखकर दर्शक भी हंसते हैं- सब मिलकर करवा चौथ का मजाक बना रहे होते हैं। कमला भसीन फिर कहती हैं-

''पति यानि 'स्वामी', तो दूसरा क्या हुआ? 'दास' ... तो भई, पति क्यों न मारे पत्नी को?'' पूछती हैं कमला भसीन और फिर कहती हैं कि ''हमारे धर्म, संस्कृति ने यही सिखाया है।'' इस पर आमिर भी अपना मत जोड़ते हैं-''हाँ, हमारी परम्परा ने यही सिखाया है।''

इस पूरे प्रकरण से प्रश्न उठता है कि हमारे धर्म, संस्कृति और परंपरा की क्या यही समझ है इन दोनों को? **आज कौन होगा जो पत्नी पर हाथ उठाने का समर्थन करेगा? मारपीट की घटनाएं शिक्षा के प्रसार और महिलाओं के स्वावलम्बी होने के साथ-साथ कम होती जा रही हैं।** शिक्षा में भारतीयत्व के अभाव के कारण भी यह हालत हुई। यदि शिक्षा में भारतीय चिंतन 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' या फिर 'मां ही मनुष्य की पहली गुरु है' अथवा शिव के 'अर्द्धनारीश्वर' रूप और उसके पीछे की सोच की चर्चा की जाती या दुर्गा के आविर्भाव की कहानी बताई जाती कि कैसे पुरुष रूपी देवता महिषासुर का अंत करने में असमर्थ होने के कारण उन्होंने दुर्गा रूपी नारी के द्वारा उसका अंत कराया, तो न कोई मर्द स्त्री पर हाथ उठाता और न ही दुर्गा रूपी मातृशक्ति किसी से मार खाती। 'पत्नी' के लिए 'सहधर्मिणी', 'सहगामिनी', 'अर्द्धांगिनी' आदि शब्द भी खूब प्रचलित हैं। क्या इन शब्दों के अर्थ बता पाएंगे आमिर खान? क्या ये शब्द 'लैंगिक असमानता' के द्योतक हैं? स्त्रियों के प्रति हिंसा भारत में बहुत बाद की उपज है। काश उस एपिसोड में शिवाजी या महाराणा प्रताप के जीवन प्रसंग बताए जाते जहां पराजित शत्रु की सुंदर पत्नी उन्हें भेंट की गई थी और उन्होंने उसे 'माँ' कहकर ससम्मान उसके पति के पास पहुँचा दिया था।

हिंदू संस्कृति और चिंतन में तो धन, विद्या और शक्ति के लिए किसी देवता के बजाय तीन देवियों-लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की आराधना की जाती है। आमिर खान यदि अपने घरेलू हिंसा के एपिसोड में भारतीय दर्शन-चिंतन और परंपरा के इन तत्वों की चर्चा करते तो एक सकारात्मक विचार सब तक पहुँचता।

परन्तु नहीं जी, लगता है कि उन्हें तो हिंदुओं के मन में ही उनके श्रेष्ठ त्योहारों और परंपराओं के प्रति वितृष्णा का भाव जगाना था, रक्षाबंधन और करवा चौथ जैसे पवित्र त्योहारों का मजाक बनाना था। आमिर भूल गए थे कि उनके इस तरह के कार्यों को लोग भूल नहीं पाएंगे। आज जब देश में राष्ट्रीयता और हिंदू स्वाभिमान की लहर चल रही है तो बहुसंख्यक हिंदू समाज अपनी चिर निद्रा से जाग रहा है।

'हलाला' पर चर्चा क्यों नहीं?

आमिर खान ने अब तक क्यों नहीं किसी मुस्लिम महिला एक्टिविस्ट या एक्स मुस्लिम को अपने शो में बुलाया जो बताती कि मर्द जब बिना वजह और बिना कारण बताए अचानक अपनी बीवी को तलाक दे देता है तो उस महिला

पर क्या गुजरती है? और फिर यदि वह वापस उस महिला से विवाह करना चाहे तो तभी कर सकता है जब कोई पुरुष उस महिला से विवाह कर उसके साथ हमबिस्तर होने के बाद उसे तलाक दे दे। इस 'हलाला' प्रथा की चर्चा करने की हिम्मत आमिर को क्यों नहीं हुई?

मतांतरण करने का सुझाव

एक अन्य एपिसोड में जातिवाद पर हो रही चर्चा के दौरान वार्ता के लिए आमंत्रित एक व्यक्ति को यह कहते हुए दिखाया गया है कि आप लोग अभी भी उस धर्म में क्यों हैं जहां आपके साथ भेदभाव होता है? आप क्यों नहीं दूसरे धर्म में चले जाते? आमिर खान ने उनके इस सुझाव का कोई प्रतिकार नहीं किया था।

मोदी विरोध

दो दशक पूर्व हुए गुजरात दंगों के लिए आमिर ने सरेआम नरेन्द्र मोदी को दोषी ठहराया था और अमेरिका द्वारा मोदी को वीजा न देने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मोदी का मजाक बनाया था। 2015 में मोदी के प्रधानमंत्रित्व काल की शुरुआत में ही आमिर ने देश में असहिष्णुता का राग अलापना शुरू कर दिया। आमिर ने कहा कि उसकी पत्नी 'देश के माहौल से डर कर देश छोड़ने की बात करती है।' तब आमिर की दूसरी पत्नी किरण को कहां पता था कि आमिर उसे ही छोड़ने वाले हैं।

आतंकवादी के प्रति सहानुभूति निर्माण का प्रयास

फिल्म लाल सिंह चड्ढा अमेरिकन फिल्म 'फॉरेस्ट गंप' का आधिकारिक रिमेक है। मूल फिल्म में नायक वियतनाम युद्ध के दौरान अपने सैन्य अधिकारी की जान बचाता है। बाद में उनमें दोस्ती हो जाती है और वे मिलकर व्यापार करते हैं। आमिर ने इस दृश्य को तोड़-मरोड़कर नायक को कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी आतंकवादी मोहम्मद पाशा की जान बचाते हुए दिखाया जो आगे चलकर नायक का मित्र बन जाता है और वे मिलकर व्यापार करते हैं। देखने में यह दृश्य एक मानवीय संवेदना का प्रतीक दिखाई देगा, परंतु प्रकारांतर से देखें तो आमिर ने एक शत्रु देश के आतंकवादी के प्रति जनता में सहानुभूति निर्माण करने का प्रयास किया है। पाकिस्तान आज भी भारत में आतंकवादी भेजने से बाज नहीं आया है।

भारत विरोधी तुर्की से प्रेम

फिल्म लाल सिंह चड्ढा के कुछ दृश्यों को तुर्की देश में फिल्माया गया है। आमिर वहां पर राष्ट्रपति की पत्नी से मुलाकात करते हैं। अनेक लोगों को आमिर का एक व्यवहार उचित नहीं लगा, क्योंकि तुर्की के राष्ट्रपति विश्व में भारत विरोधी अभियान के अगुआ रहे हैं।

हमें समझना होगा कि आमिर मोदी नाम के किसी व्यक्ति का विरोध नहीं कर रहे हैं। वे उसी भारतीय सभ्यता, संस्कृति और परंपरा का विरोध कर रहे हैं जिसके मानने वालों ने अपने 'धर्मनिरपेक्ष स्वभाव' के कारण आमिर को शोहरत दी और उनकी फिल्मों को हिट-सुपरहिट किया तथा उन्हें बुलंदी पर पहुँचाया।

परन्तु अब आमिर जैसे लोगों को अपनी सोच और व्यवहार को बदलने की आवश्यकता है अन्यथा हिंदुत्व के स्वाभिमान और समाज जागृति की लहर में वे पूर्णतया अप्रासंगिक और महत्वहीन होने वाले हैं। ●

– रामस्वरूप अग्रवाल

लव-जिहाद के बढ़ते मामले

प्रेम संबंध के लिए तैयार नहीं हुई तो पेट्रोल डालकर जला दिया

अंकिता ने मरने से पहले कहा- "जैसे मैं मर रही हूँ वैसे ही शाहरुख भी मरे"

पिछले दिनों समाचार पत्रों में झारखंड के दुमका का दिल दहला देने वाला मामला छपा। एक मुस्लिम युवक शाहरुख ने 16 वर्ष की नाबालिग छात्रा को पेट्रोल डालकर जिंदा जला दिया। पुलिस के अनुसार शाहरुख पिछले कुछ समय से 12वीं कक्षा में पढ़ने वाली अंकिता को परेशान कर रहा था और जब वह प्रेम संबंध रखने को तैयार नहीं हुई तो शाहरुख ने धमकी दी थी कि अगर मेरा कहा नहीं मानेगी तो तुम्हें मार डालूँगा। 23 अगस्त को शाहरुख ने अंकिता पर देर रात सोते समय खिड़की से पेट्रोल उड़ेलकर आग लगा दी, जिससे अंकिता 90 प्रतिशत जल गई थी। दुमका के पुलिस अधीक्षक श्री अंबर लकड़ा ने बताया कि रांची स्थित रिम्स में इलाज के दौरान अंकिता की मौत हो गई। बताते हैं कि आरोपी शाहरुख अंकिता के पड़ोस में रहता था।

इस घटना के बाद क्षेत्र के लोगों में भारी रोष दिखाई दिया और हालात तनावपूर्ण हो गए। बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद ने 28 अगस्त को दुमका में बाजार बंद रखा तथा विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने शाहरुख के खिलाफ फास्ट ट्रैक कोर्ट में मुकदमा चलाकर फांसी देने की मांग की है।

बताते हैं कि मरने से पहले अंकिता ने बयान दिया कि जैसे मैं मर रही हूँ वैसी ही मौत शाहरुख को भी मिले। अंकिता के पिता संजीव सिंह का कहना है कि शाहरुख दो वर्ष से अंकिता को परेशान कर रहा था। शाहरुख की छवि मोहल्ले में आवारा लड़के की थी। वह मोहल्ले की लड़कियों को परेशान किया करता था। अंकिता ने मौत से पहले यह भी बयान दिया। बताया जाता है कि जब भी मैं स्कूल जाती, वह मेरा पीछा करता था। 22 अगस्त की रात उसने मुझे धमकी दी थी कि अगर मैं उसकी बात नहीं मानूंगी तो वह मुझे मार देगा।

बढ़ गए हैं लव-जिहाद के मामले

यद्यपि पुलिस ने शाहरुख को गिरफ्तार कर लिया है, परन्तु इस घटना के साथ ही झारखंड में लव-जिहाद की सामने आई

प्रतीकात्मक चित्र

कई घटनाओं पर दृष्टि डालेंगे तो स्पष्ट होगा कि लव-जिहाद के मामले पिछले दिनों तेजी से बढ़े हैं। एक समुदाय विशेष के युवकों द्वारा अपना नाम बदलकर हिंदू नाम रखते हुए हिंदू-लड़कियों को प्रेमजाल में फंसाने के मामले लगातार आ रहे हैं।

अधिकतर मामलों में लड़कियां विवश होकर लव जिहादियों के आगे समर्पण कर देती हैं। जहां असलियत का पता होने पर यदि लड़की विरोध करती है तो उसे मारने का प्रयास किया जाता है। अंकिता वाले मामले के कुछ दिन बाद ही झारखंड के लोहरदगा जिले के मुस्लिम युवक रबानी अंसारी ने ऐसे ही एक मामले में लड़की को कुएं में धकेल कर मारने की कोशिश की।

धर्म छिपाकर संबंध बनाने का मामला, पुलिस ने आरोपी रबानी अंसारी को किया गिरफ्तार

इसी सितम्बर माह की शुरुआत में झारखण्ड में लोहरदगा जिले की महिला थाना पुलिस ने एक मुस्लिम युवक को गिरफ्तार कर जेल भेजा है जिस पर अपना नाम छुपा कर एक हिंदू नाबालिग को प्रेमजाल में फंसा कर शारीरिक शोषण का आरोप है।

पता चला है कि रबानी अंसारी नामक मुस्लिम युवक ने अपना नाम साजन बताकर हिंदू नाबालिग को प्रेम जाल में फंसाया। बताया जाता है कि मोबाइल फोन पर रॉन्ग नंबर से बात शुरू हुई थी। बाद में रबानी लड़की को रांची में एक किराए के मकान में ले गया। इसी दौरान नाबालिग लड़की को उस युवक का आधार कार्ड मिला, तब उसका असली नाम रबानी अंसारी सामने आया। असलीयत खुलने पर और लड़की द्वारा विरोध करने पर रबानी ने नाबालिग लड़की को एक कुएं में धकेल दिया तथा ऊपर से पत्थर फेंक कर जान से मारने की कोशिश की। फिर भी लड़की किसी तरह से बच गई। वह बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाकर घर पहुँची और घरवालों को सारी बात बताई। समाज और हिंदू संगठनों के लोगों ने आगे आकर उस परिवार की मदद की है।

नाम बदलकर प्रेमजाल में फंसाने का एक और मामला- आरोपी युवक है फरार

झारखंड के सिमरेगा जिले के बोलवा थाना क्षेत्र में अल्पसंख्यक वर्ग के एक युवक द्वारा अपनी जाति-धर्म छिपाकर एक हिंदू युवती को प्रेमजाल में फंसाने का मामला सामने आने पर युवक फरार हो गया।

बताते हैं कि मोहम्मद नईम मियां ने जाति-धर्म छिपाकर पहले तो युवती को अपने प्रेमजाल में फंसाया, फिर शादी कर ली। इनके एक बच्चा भी है। दावा किया जा रहा है कि युवक ने पीड़ित युवती की छोटी बहिन से दुष्कर्म कर वीडियो बना लिया और उसे वायरल करने की धमकी देता रहता था। नईम मियां ने अपना नाम संदीप सिंह रखा तथा पीड़िता से कोर्ट मैरिज कर ली थी।

वोट बैंक और तुष्टीकरण

पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने कहा है कि ऐसी घटनाएं वोट बैंक और तुष्टीकरण का परिणाम हैं। उनका अंकिता वाले मामले में कहना था कि आरोपी नईम को एयर एंबुलेंस से भेजकर सरकारी खर्च पर सरकार इलाज करवा रही है जबकि अंकिता को उसके हाल पर छोड़ दिया गया था।

घर में घुस कर बलात्कार

जिस दिन अंकिता का निधन हुआ उसी दिन एक नाबालिग जनजातीय लड़की से उसके घर में घुसकर बलात्कार करने के

लव-जिहाद मामले में 14 वर्ष की जेल

लव-जिहाद के मामले में अपराधी को न्यायालय द्वारा सजा देना आरंभ हो गया है। हाल ही में झारखंड में रामगढ़ जिले के निवासी अकील अहमद उर्फ इरशाद अंसारी को रामगढ़ के जिला न्यायाधीश ने 14 वर्ष के कारावास तथा 20 हजार रूपयों के जुर्माने की सजा सुनाई।

जांच अधिकारी राजे कुमारी कुजूर ने बताया कि अकील रामगढ़ में डांस (नृत्य) सिखाने का काम करता था। पीड़ित हिंदू लड़की भी वहां डांस सीखने जाती थी। इसी दौरान अकील अहमद ने पहले लड़की से दोस्ती की, फिर एक दिन धोखे से नशीला पदार्थ खिलाकर उसका अपहरण कर पहले रांची, फिर कोलकाता ले गया। पैसों की कमी पड़ने पर वापस युवती को रांची स्थित पुनदाग के एक मुस्लिम मोहल्ले में लेकर आया। यहां उसने युवती को जबरन इस्लाम कबूल करवाकर उससे निकाह किया।

क्यों हो रही हैं लड़कियां लव-जिहाद का शिकार ?

झारखण्ड और कई दूसरे राज्यों में हिंदू लड़कियों के लव-जिहाद की शिकार होने के समाचार आते रहते हैं। प्रश्न उठता है कि क्यों होती हैं लड़कियां लव-जिहाद की शिकार?

कहीं ऐसा तो नहीं है कि हमारे घरों में माता-पिता का अपने बच्चों से संवाद ही नहीं हो रहा है। बच्चों को परिवार में भरपूर स्नेह और अपनापन मिलना आवश्यक है। क्या परिवार में किशोर होती बच्चियों के साथ उसकी माँ, बड़ी बहिन, बुआ, दादी या किसी अन्य महिला का मित्रवत व्यवहार और संबंध नहीं है। जहां वह अपने मन की बात कह सके?

कहीं आज की शिक्षा व्यवस्था हिंदू परिवार और हिंदू रीति-रिवाजों के प्रति हमारी बेटियों में विद्रोह की भावना तो नहीं भर रही?

एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से कक्षा छः से ही बच्चों को पढ़ाया जाता है कि समाज में महिलाओं को बहुत दबाकर रखा गया था, लड़कियों को प्रताड़ित किया जाता था, पढ़ने का अधिकार नहीं था। कक्षा 7 में रमाबाई के बारे में बताया गया है कि हिंदू समाज द्वारा पढ़ने से रोकने व प्रताड़ना से वह ईसाई धर्म की ओर आकर्षित हुई। जब लड़कियों को ऐसी बातें पढ़ाई जाएंगी तो स्वाभाविक तौर पर उनके मन में हिंदू समाज के प्रति गलत धारणा बनेगी तथा गैर-हिंदू के प्रति सद्भावना। रमाबाई की समकालीन रही हैं डॉ.आनंदी बाई जोशी, जो उन दिनों डॉक्टरी पढ़ने के लिए अमेरिका गई थीं। हालांकि कठिनाई उन्हें भी आई थीं, परंतु उन्होंने अपना धर्म बदलने के लिए नहीं सोचा। तो इन पाठ्यपुस्तकों में डॉ. आनंदी बाई जैसी महिलाओं के बारे में क्यों नहीं पढ़ाया जाता?

बच्चों की पाठ्यपुस्तकों में क्यों नहीं बताया जाता कि वेदों की बहुत सी ऋचाओं की दृष्टा (रचनाकार) महिलाएं रहीं हैं। पर्दा प्रथा और लड़कियों को प्रताड़ना हिंदू धर्म में पहले नहीं था, यह बाद में आया। यह हिंदू चिंतन से मेल नहीं खाता। इन पाठ्यपुस्तकों में एक कम्युनिस्ट संस्था इप्टा की लिखी 'क्रांतिकारी' और 'विद्रोही' कविताएं पढ़ाई जाती हैं। 'कन्यादान' पर लिखी एक कविता से लड़कियों के मन में कन्यादान, विवाह आदि के प्रति विद्रोह की भावनाएं आना स्वाभाविक है। देखिए यह पंक्ति-'लड़की को दान में देते वक्त, जैसे वह अंतिम पूंजी हो।... माँ ने कहा लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना।' हमारी फिल्में भी कुछ कम बिगाड़ नहीं कर रही हैं, जो भाग कर विवाह करने को प्रोत्साहित करती हैं। मैंने प्यार किया, कयामत से कयामत तक, केदारनाथ और न जाने कितनी ऐसी ही फिल्में हैं।

और अंत में यह कि जब ऐसी शिक्षा और फिल्मी संस्कारों से निकली बच्चियों को परिवार में स्नेह और अपनापन नहीं मिलता, जब परिवार या निकट रिश्तेदारों से उसे मित्रवत संबंध नहीं मिलता तब समाज में घूम रहे भेड़िए प्यार का थोड़ा सा भी नाटक उनके साथ करने लगते हैं तो उन्हें वही सबसे ज्यादा अपना लगने लगता है। क्या माता-पिता ने अपने बच्चों को संस्कारित करने के लिए घर में कोई व्यवस्था कर रखी है? क्या घर में संस्कारमय वातावरण है? बेटियां कहां जाती हैं? किससे मिल रही हैं? एक जिम्मेदार अभिभावक के नाते जानकारी रखनी होगी। उसके स्कूल, कॉलेज के साथी, डांस क्लास, जिम आदि का संचालक कौन है? यह देखना होगा।

आरोप में युवक सहरुद्दीन को पुलिस ने गिरफ्तार किया। घटना रांची के नरकोपी थाना क्षेत्र की है। बताते हैं कि लड़की घर पर अकेली थी। ऐसे में आस-पड़ोस वालों ने आवाज सुनकर उसकी मदद की तथा सहरुद्दीन को पकड़कर पुलिस को सूचना दी।

पूछताछ में सामने आया कि सहरुद्दीन लड़की का पड़ोसी था तथा आए दिन लड़की का पीछा करता था। नाबालिग लड़की के परिवारजनों ने कई बार उसे फटकार भी लगाई थी।

बांग्लादेशी घुसपैठियों ने झारखंड के 5 जिलों में बदल दिया है आबादी का संतुलन

बांग्लादेश से लगते झारखंड के बॉर्डर वाले पांच जिलों की अल्पसंख्यक मुस्लिम आबादी में पिछले समय में बढ़ोत्तरी होने से आबादी में असंतुलन पैदा हो गया है। लाखों की संख्या में बांग्लादेश से घुसपैठिए इन जिलों में आए हैं। ये जिले हैं- साहिबगंज, पाकुड़, दुमका, गोड्डा और जामताड़ा।

घुसपैठियों ने स्थानीय नेताओं से मिलकर कई प्रमाण बनवा लिए हैं और उनके आधार पर मतदाता सूची में नाम जुड़वाकर भारत के नागरिक बन गए हैं। वे न केवल सरकारी भूमि को अतिक्रमण कर अपने कब्जे में कर रहे हैं, वरन अल्पसंख्यक व पिछड़े के नाम पर कई सरकारी योजनाओं का लाभ भी ले रहे हैं। बांग्लादेश से आए कई लोगों ने स्थानीय महिलाओं से शादी कर ली है और यहीं पर आराम से रह रहे हैं।

भारत व बांग्लादेश दोनों की नागरिकता

गत अगस्त माह में ही गिरीडीह जिले के गांव पिहरा- चटनियादाह से पुलिस ने मोहम्मद नौशाद नाम के व्यक्ति को गिरफ्तार किया जिसने भारत और बांग्लादेश दोनों की नागरिकता ले रखी है।

प्रतिबंधित संगठन सक्रिय

सूत्र बताते हैं कि इन क्षेत्रों में जमात उल मुजाहिदीन बांग्लादेश, पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया और अंसार उल बांग्ला जैसे

झारखंड के मंत्री हफीजुल हसन ने दिया था धमकी भरा बयान

हिंदू 80% तो हम भी 20 फीसदी हैं... परेशान करोगे तो आपको भी होगी तकलीफ

देश में पिछले दिनों लाउडस्पीकर, हनुमान चालीसा आदि को लेकर चल रहे विवाद के बीच झारखंड सरकार में अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री हफीजुल हसन ने बयान दिया था कि अगर देश में मुस्लिमों को परेशान किया गया तो इसका नुकसान हिंदुओं को उठाना पड़ेगा। उन्होंने दिल्ली के जहांगीरपुरा में अतिक्रमण पर हुई कार्रवाई को लेकर कहा कि अगर हमारा 20% घर बंद होगा तो आपका भी 80% घर बंद होगा।

झारखंड भाजपा के प्रमुख दीपक प्रकाश ने मंत्री हसन के बयान पर कड़ी आपत्ति जताई है। इससे पूर्व केन्द्र सरकार द्वारा लड़कियों की शादी की उम्र 18 से 21 वर्ष किए जाने के निर्णय का विरोध करते हुए हसन ने कहा था कि अगर लड़की समझदार है तो उस बच्ची की शादी 16 वर्ष की उम्र में भी हो जाए तो उसमें कोई बुराई नहीं है।

प्रतिबंधित संगठनों का प्रभाव बढ़ा है।

विधायक बाबूलाल मरांडी का कहना है कि अंकिता की नृशंस हत्या करने वाले शाहरुख और उसके दोस्त मो.नईम बांग्लादेश के आतंकी संगठन अंसार-उल-बांग्ला से प्रेरित थे। नईम का मोबाइल रिकॉर्ड इस बात की गवाही देता है। मरांडी के अनुसार यह अलकायदा का एक फ्रंट ग्रुप है, जिसका उद्देश्य गैर मुस्लिम महिलाओं को निशाना बनाना और उनका धर्म परिवर्तन करना है।

झारखंड का ही लव-जिहाद का एक बहुचर्चित मामला

एयर राइफल शूटर (निशानेबाज) तारा सहदेव से रफीबुल हुसैन उर्फ रंजीत सिंह कोहली ने अपना मजहब छिपाते हुए शादी कर ली थी। तारा सहदेव का आरोप था कि कोहली बाद में उसे इस्लाम अपनाने के लिए यातना देने लगा था। कोहली उर्फ हुसैन को तब 2014 में गिरफ्तार कर लिया गया था और पांच वर्ष पश्चात् ही कई शर्तों के साथ उसे जमानत मिली थी। तारा सहदेव ने पति द्वारा की गई क्रूरता के आधार पर तलाक ले लिया था।

झारखंड में ऐसा भी हुआ एक 'लैंड जिहाद'

झारखंड के पलामू में अगस्त माह के अंतिम दिनों में एक विशेष समुदाय के लोगों द्वारा पचास से अधिक महापिछड़े (मुसहर समुदाय) के परिवारों को पीटने तथा उन्हें उनकी ही जमीन से बेदखल करने का मामला सामने आया है।

घटना कुजरूकला पंचायत के अंतर्गत मुरुमातु गांव के पास की है। वहां मुसहर समुदाय के लोग खपरैल के घरों में विगत 40 वर्षों से रह रहे थे। 29 अगस्त,2022 को एक समुदाय विशेष के लोग वहां आए और यह कह कर कि वह जमीन मदरसे की है, महापिछड़े उन मुसहर परिवारों के साथ मारपीट की तथा उनके घरों को ध्वस्त करते हुए उन्हें बच्चों सहित ट्रैक्टरों में बैठाकर जंगल में छोड़ दिया।

इस घटना पर विधायक अमर बाउरी ने राज्य सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि राज्य में दलित और आदिवासी सुरक्षित नहीं हैं। ऐसा लग रहा है कि यह खबर अफगानिस्तान या पाकिस्तान की है। लेकिन सच तो यही है कि यह घटना झारखंड के पलामू की है। ●

राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रों में समुदाय विशेष की बढ़ती असंतुलित जनसंख्या तथा बढ़ते मदरसे व मस्जिदें

राजस्थान के पाकिस्तान से लगते सीमा क्षेत्रों में रहने वाले मुसलमानों की राजस्थान के गीत-संगीत और संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में पहचान रही है। परन्तु पिछले कुछ वर्षों में यहां अरबी संस्कृति का प्रभाव मजहबी कट्टरवाद, मतान्तरण, लव-जिहाद, लैंड-जिहाद जिस तरह से बढ़ा है, वह चिंता का विषय है। वैसे अनुभव में यह भी आया है कि जहां-जहां मुस्लिम समुदाय की जनसंख्या बढ़ी है, वहां-वहां से हिन्दुओं का पलायन हुआ है। स्थिति अब यह है कि वहां अनुसूचित जाति के परिवारों पर इन मजहबी मुसलमानों की दबंगई बढ़ी है।

क्षेत्र से बाहर के मुसलमानों ने इस क्षेत्र में न केवल बसना शुरू कर दिया है वरन भारी मात्रा में निवेश भी किया है। इन सबके कारण सीमावर्ती क्षेत्रों में मुस्लिम जनसंख्या में 22 से 25 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है, जबकि अन्य समुदायों की जनसंख्या 8 से 10 प्रतिशत ही बढ़ी है।

सीमावर्ती क्षेत्रों में बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर और श्रीगंगानगर जिले आते हैं। इन सीमावर्ती जिलों में घुसपैठ की घटनाएं तो आम बात थी ही, लेकिन अब इन क्षेत्रों में जो सबसे बड़ा खतरा बन कर उभर रहा है, वह है सीमावर्ती क्षेत्रों में मस्जिदों और मदरसों की निरंतर बढ़ती संख्या।

सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की ओर से 2018 में राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रों के बारे में एक रिपोर्ट तैयार की गई थी। 'राजस्थान के सीमावर्ती जिलों में बदलता जनसांख्यकीय पैटर्न और सुरक्षा पर इसका प्रभाव' नामक इस रिपोर्ट में स्पष्ट किया गया था कि जैसलमेर जिले के पोखरण और मोहनगढ़ जैसे क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश के देवबंद से मौलवी अक्सर आते रहते हैं, जिनके प्रभाव से यहां मजहबी कट्टरवाद तेजी से पांव पसार रहा है। यहां जमीनों में मुस्लिम समुदाय द्वारा बड़ा निवेश किया जा रहा है जो यहां पर साम्प्रदायिक विद्वेष का बड़ा कारण भी बन रहा है।

चूंकि यह क्षेत्र पाकिस्तान से लगता हुआ है, इसलिए यहां पाकिस्तानी मोबाइल नेटवर्क आसानी से उपलब्ध हैं। लोगों के पास पाकिस्तानी सिम मिल जाती है। कई बार सेना की महत्वपूर्ण जानकारियां लीक होने के मामले भी सामने आए हैं। घुसपैठ की घटनाएं तो हमें आमतौर पर सुनने-पढ़ने को मिल ही जाती हैं।

गांधी जयंती पर विशेष

गांधी जी के साथ ही चला गया 'गांधी-दर्शन'

● नरेन्द्र सहगल

महात्मा गांधी भारतीय अंतर्मन के सशक्त हस्ताक्षर थे। रामराज्य, वैष्णव-जन एवं हिन्द स्वराज जैसे आदर्श उनकी जीवन यात्रा के घोषणा पत्र थे। स्वदेश, स्वदेशी, स्वधर्म, स्वसंस्कृति, स्वभाषा और स्वराज इत्यादि विचार तत्वों को गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन की कार्य संस्कृति और उद्देश्य घोषित किया था।

हिन्द स्वराज

महात्मा गांधी इन्हीं आदर्शों के आधार पर भारतीयों को सत्याग्रहों/आंदोलनों में भाग लेने की प्रेरणा देते रहे। गांधी जी तो जीवन के अंत तक प्रयास करते रहे कि 'रामराज्य' और 'हिन्द स्वराज' जैसी भारतीय परंपराओं और भारत की संस्कृति के आधार पर भारत के संविधान, शिक्षा प्रणाली, अर्थ व्यवस्था और एकात्म सामाजिक व्यवस्था इत्यादि का ताना-बाना बुना जाए।

महात्मा गांधी ने 'यंग इंडिया' पत्रिका में अपने एक लेख में लिखा था-''अंग्रेज रहें, उनकी सभ्यता चली जाए यह तो मुझे मंजूर है, परंतु अंग्रेज चले जाएं और उनकी सभ्यता यहां राज करती रहे, यह मुझे मंजूर नहीं। इसे मैं स्वराज नहीं कहूंगा।''

सत्ता की भूख

देश के दुर्भाग्य से विभाजन के पश्चात् खंडित भारत की सरकार के सभी प्रकार की व्यवस्थाओं में कुछ भी भारतीय नहीं था और ना ही राष्ट्रीय स्वाभिमान के इस अति-महत्वपूर्ण विचार पर किसी को सोचने की फुर्सत थी। सत्ता की भूख के उतावलेपन में जिस तरह भारत का विभाजन स्वीकार किया गया, ठीक उसी तरह हमारे कांग्रेसी महात्मा गांधी, जयप्रकाश नारायण, डॉ. राममनोहर लोहिया, आचार्य नरेंद्र देव, और पुरुषोत्तमदास टंडन जैसे राष्ट्रीय स्वतंत्रता सेनानियों की विचारधारा से दूर हट गए।

इन सत्ताधारियों ने अंग्रेजों द्वारा थोपी गई राजनीतिक एवं संवैधानिक व्यवस्था की लकीर के फकीर बनना ही उचित समझा। ब्रिटिश सत्ता के कालखंड में स्वतंत्रता संग्राम के अगुआ महात्मा गांधी के उन सिद्धांतों और वैचारिक मूल्यों को भुला दिया गया, जिन्हें आदर्श मान कर स्वतंत्रता की जंग लड़ी गई थी।

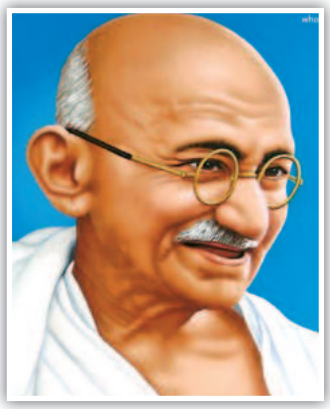

अंधानुकरण के विरोधी

महात्मा गांधी पश्चिम के अंधानुकरण के घोर विरोधी थे। उनके विचारानुसार विशाल यंत्रों पर आधारित औद्योगिक क्रांति, पश्चिम में प्रचलित चुनाव प्रणाली, पश्चिम की सभ्यता पर आधारित शिक्षा व्यवस्था तथा आर्थिक रचना भारत जैसे धर्म प्रधान एवं 75 प्रतिशत से ज्यादा गांवों में रहने वाले भारतीयों के लिए सर्वाधिक नुकसानदायक साबित होगी।

गांधी जी ने नेहरू के नाम लिखे एक पत्र में कहा था-**''आधुनिक विज्ञान का प्रशंसक होते हुए भी मैं यह अनुभव करता हूं कि हमारे देश के प्राचीन जीवन मूल्यों को ही आधुनिक विज्ञान के आलोक में संवार कर अपनाना चाहिए।''** गांधी जी के अनुसार अंग्रेज शासकों ने भारत को पाश्चात्य शिक्षा, प्रशासन, संविधान और आर्थिक मकड़जाल में फंसा दिया था। स्वराज प्राप्ति के पश्चात् यदि देश को इस विदेशी मकड़जाल से ना निकाला गया, तो स्वाधीनता का कोई अर्थ नहीं बचता।

गांधी दर्शन को किया नापसंद

दुर्भाग्य से पंडित नेहरू को गांधी जी के ध्येय-वाक्य स्वधर्म, स्वभाषा, अपरिग्रह, हिन्द स्वराज, रामराज्य इत्यादि विचार पसंद नहीं थे। अपने को 'एक्सीडेंटल हिंदू' कहने वाले और अंग्रेजी सभ्यता में संस्कारित नेहरू जी को 'गांधी-दर्शन' से कुछ भी लेना-देना नहीं था। **गांधी जी गांव को एक इकाई मानकर आर्थिक विकास की रचना चाहते थे, जबकि भारतीय ग्रामीण व्यवस्था से पूर्णतया अनभिज्ञ नेहरू जी शहरों के विकास को महत्व देकर अपनी आर्थिक योजनाओं में जुट गए। इस प्रकार नेहरू जी ने देश के 75 प्रतिशत ग्रामीण भारतीयों के पेट पर लात मार दी।**

भारतीय दर्शन को तिलांजलि

महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम को दो सभ्यताओं के संघर्ष के रूप में देखा था। उन्होंने अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में लिखा था -''कुछ लोग मेरे हिन्दुस्तान को इंग्लिशस्तान बनाना चाहते हैं, परंतु वे जान लें कि ऐसी हालत में तब वह हिन्दुस्तान नहीं रहेगा, यह मेरी कल्पना का स्वराज नहीं होगा।''

परंतु, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी परतंत्रता को जारी रखा गया। गांधी जी के 'भारतीय-दर्शन' को तिलांजलि दे दी गई। भारत की सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक धरोहर को तोड़ डालने के भयानक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष के समय जो भारत एकजुट था, वह अब भाषा, क्षेत्र, जाति और मजहब के आधार पर विभाजित हो गया। 15 अगस्त, 1947 को हुए भौगोलिक विभाजन के बाद यह अपनी तरह का एक ऐसा विभाजन था, जिसने एकत्व को विघटन में बदल दिया। वोट बैंक की राजनीति का उदय हो गया। भ्रष्टाचार, अलगाववाद तथा आतंकवाद का बोलबाला हो गया।

रामराज्य का संकल्प

देशवासियों के सौभाग्य से आज परिवर्तन की लहर चली है। गांधी जी के दर्शन के अनुसार राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में परिवर्तन होने शुरू हुए हैं। अखंड-भारत, स्वदेशी, सामाजिक सामंजस्य और रामराज्य का गांधी जी का संकल्प साकार होता हुआ दिखने लगा है। यह भी कितने आश्चर्य की बात है कि जिन राष्ट्र समर्पित देशभक्त लोगों पर महात्मा गांधी की हत्या का झूठा, बेबुनियाद और अनर्गल आरोप लगाने का षड्यंत्र रचा गया था, वही लोग 'गांधी-दर्शन' पर चलते हुए गांधी जी को सच्ची श्रद्धांजलि दे रहे हैं।

(लेखक संघ के पूर्व प्रचारक और स्तम्भकार हैं)

फादर कामिल बुल्के

एक ईसाई पादरी ने सिद्ध किया कि राम काल्पनिक नहीं इतिहास पुरुष थे और रामकथा है अंतरराष्ट्रीय कथा

● महेश चन्द्र माथुर

विदेशी मूल के ईसाई पादरी फादर कामिल बुल्के ने भारतीय संस्कृति के आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम राम के पावन चरित्र पर न केवल गहन शोध किया, वरन अंग्रेजी-हिंदी का प्रसिद्ध शब्दकोश भी तैयार किया। यूरोपीय देश बेल्जियम के एक गाँव में बुल्के का जन्म 1 सितम्बर, 1909 को हुआ। उन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की और अपने अध्ययन के अन्तिम वर्ष में वैराग्य की भावनावश वे ईसाई परिव्राजक अर्थात् पादरी बन अपना कार्यक्षेत्र भारत को चुना।

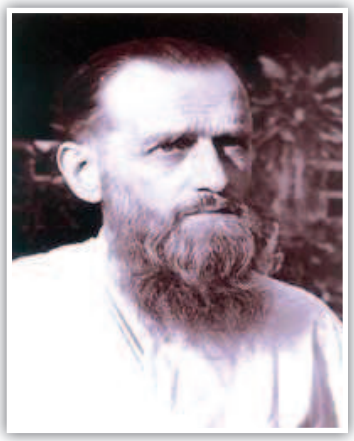

अपनी संस्कृति से अनजान भारतीयों को देखकर हुआ दुःख

1935 में जब वे भारत पहुंचे तब उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर कहा ''मुझे यह देखकर आश्चर्य और दुःख हुआ, मैंने जाना कि अनेक शिक्षित लोग अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं से अंजान थे और इंग्लिश में बोलना गर्व की बात समझते थे। मैंने अपने कर्तव्य पर विचार किया कि मैं इन लोगों की भाषा को सिद्ध करूंगा।''

भारत में आकर फादर बुल्के जेसुहर संस्था से जुड़े तथा ईसाई भिक्षुओं के आचार व्यवहार का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनका अध्ययन दार्जिलिंग तथा कलकत्ता में हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बीए करने के पश्चात् हिन्दी में एमए करने के लिए इलाहाबाद आ गए। यहाँ हिन्दी विभाग में भाषा विज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. धीरेन्द्र वर्मा थे।

रामकथा पर शोध कार्य

एमए करने के पश्चात् फादर बुल्के ने डॉ. वर्मा के निर्देशन में पीएचडी हेतु शोधकार्य किया। उनके शोध का विषय था 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास'। ईसाई धर्म का प्रचारक होते हुए भी अपने शोध-विषय के अध्ययन में बुल्के ने अथक श्रम किया। रामकथा की प्राचीनता तथा इसका विस्तार धरती के विशालकाय भू-भाग पर होने के कारण समस्त सूत्रों को एकत्रित कर उन पर सार्थक लेखन अत्यन्त कठिन था।

राम नहीं हैं काल्पनिक

फादर बुल्के ने पूरी दुनिया से रामायण और रामकथा के 300 रूपों की पहचान की। उन्होंने शोध से यह स्पष्ट किया कि राम वाल्मीकि के कल्पित पात्र नहीं, इतिहास पुरुष थे। तिथियों में थोड़ी बहुत चूक हो सकती है। **फादर बुल्के ने इस शोध ग्रंथ में पहली बार साबित किया कि रामकथा केवल भारत की ही नहीं, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय कथा है। यह वियतनाम, इण्डोनेशिया और कम्बोडिया तक फैली हुई है। फादर बुल्के ने हॉलैण्ड के अपने मित्र का हवाला देते हुए कहा कि इण्डोनेशिया में मुस्लिम मौलाना कुरान भी पढ़ते हैं और रामायण भी पढ़ते हैं। रामायण के पक्ष में उनकी दलील है कि और अच्छा मनुष्य बनने के लिए वे रामायण पढ़ते हैं।** इण्डोनेशिया और सुदूर दक्षिणपूर्व के एशियाई देशों में रामकथा पर आधारित नृत्य तथा नाटकों का मंचन होता है। उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोपीय देशों में वाल्मीकि रामायण तथा रामाश्रित ग्रथों के अध्ययन का नवीन उपक्रम देखा गया।

हिंदी में लिखा शोध ग्रंथ-बदले गए नियम

रामकथा के इस विस्तार को फादर बुल्के वाल्मीकि और भारतीय संस्कृति की दिग्विजय कहते थे। फादर बुल्के ने जिस समय पीएचडी की। उस समय सारे विषयों की थीसिस अंग्रेजी में ही लिखी जाती थी। जब फादर बुल्के ने हिन्दी में लिखने की अनुमति मांगी तब विश्वविद्यालय ने शोध संबंधी नियमों में बदलाव किया। उन्होंने लगभग 29 किताबें लिखी। उन्होंने अंग्रेजी-हिन्दी का प्रसिद्ध शब्दकोश तैयार किया, जो यहाँ के लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ। वे डॉ. धीरेन्द्र वर्मा को अपना प्रेरणास्रोत मानते थे। महादेवी वर्मा को दीदी कहते थे।

दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष रह चुके प्रो. नित्यानन्द तिवारी कहते हैं कि मैंने उनमें हिन्दी के प्रति हिन्दी वालों से कहीं ज्यादा गहरा प्रेम देखा, ऐसा प्रेम जो भारतीय जड़ों से जुड़कर ही सम्भव है। उन्होंने रामकथा और रामचरितमानस को बौद्धिक जीवन दिया। फादर बुल्के के प्रेरक रहे प्रो. धीरेन्द्र वर्मा ने कहा था कि 'रामकथा शोध' रामकथा सम्बन्धी समस्त सामग्री का विश्वकोश कहा जा सकता है वास्तव में यह शोध ग्रंथ अपने ढंग की पहली रचना है। तुलसीदास की रचनाओं को समझने के लिए उन्होंने अवधी और ब्रजभाषा सीखी।

बेल्जियम से भारत आया एक मिशनरी, भारत आकर मृत्युपर्यन्त हिन्दी, तुलसी और वाल्मीकि का भक्त रहा। वे संकीर्ण मत-मतान्तरों के वाद-विवाद से सदा दूर रहे। फादर बुल्के धर्मान्तरण करने-कराने की दूषित प्रक्रिया के सदा विरोधी रहे।

पद्मभूषण से सम्मानित

उन्होंने 1950 में भारत की नागरिकता ग्रहण की। 1974 में साहित्य व शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए भारत सरकार ने फादर कामिल बुल्के को पद्मभूषण से सम्मानित किया। 73 वर्ष की आयु में 17 अगस्त, 1982 को गैंगरीन के कारण फादर ने दिल्ली में अन्तिम सांस ली। जब उनके पार्थिव शरीर को कश्मीरी गेट के निकलसन कब्रगाह में भूमिस्थ किया गया तब वहाँ मसीह समुदाय के अतिरिक्त हिन्दी के जाने-माने साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, प्रो. निर्मला जैन आदि उपस्थित थे। ●

(लेखक पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष तथा नव शिक्षा समाज, जोधपुर के संयुक्त सचिव हैं)

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें –
सामान्य– 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ–** 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम –** यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. गदर पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष कौन थे?
2. आजाद हिंद फौज की 'रानी लक्ष्मीबाई रेजिमेन्ट' की कमाण्डर कौन थीं?
3. प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी मैडम कामा का पूरा नाम क्या था?
4. वीरांगना झलकारी बाई का जन्म झांसी के किस ग्राम में हुआ था?
5. स्वाधीनता के बाद उत्तर प्रदेश की प्रथम महिला राज्यपाल बनने वाली स्वतंत्रता सेनानी कौन थी?
6. साप्ताहिक समाचार पत्र 'युगान्तर' का प्रकाशन कब प्रारम्भ हुआ?
7. काकोरी काण्ड में कितने क्रांतिकारियों को फांसी की सजा सुनाई गई?
8. स्वाधीनता के लिए फांसी पर चढ़ते समय क्रांतिकारी खुदीराम बोस की आयु कितनी थी?
9. भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत कब हुई?
10. अगस्त क्रांति दिवस का संबंध किस आंदोलन से है?

उत्तर – पृष्ठ 11 पर

तिरंगे की आन-बान-शान के लिए बलिदान हुई हाजरा

62 वर्ष की आयु में स्वाधीनता के लिए किया संघर्ष

1932 में गांधी जी के नेतृत्व में देशभर में स्वाधीनता के लिए आंदोलन चल रहा था। वंदेमातरम् का घोष करते हुए देशभक्तों का जुलूस प्रतिदिन मातंगिनी हाजरा के घर के बाहर से निकला करता था। वे शंख ध्वनि से आजादी के दीवानों का प्रतिदिन स्वागत–सत्कार करतीं और एक दिन ऐसा भी आया कि वह उस जुलूस के साथ हो ली। तामलुक (बंगाल) के कृष्णगंज बाजार में यह जुलूस एक सभा में परिवर्तित हो जाता था।

जनवरी 1933 में कर बंदी आंदोलन को दबाने के लिए बंगाल का तत्कालीन गवर्नर एण्डरसन तामलुक आया। स्थानीय लोगों द्वारा उसका पुरजोर विरोध किया गया। इस विरोध–प्रदर्शन में काला झण्डा थामे सबसे आगे थी मातंगिनी हाजरा। उन्हें भी गिरफ्तार कर 6 माह का सश्रम कारावास देकर जेल भेज दिया गया। जेल से छूटने के बाद वह पुनः देश की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने लगी।

बात 8 सितम्बर, 1942 की है जब अंग्रेजी अत्याचारों के विरुद्ध हुए एक प्रदर्शन में पुलिस की गोली से तीन देशभक्त भारत माता पर न्यौछावर हो गए थे। इस घटनाक्रम से स्थानीय लोगों में काफी रोष व्याप्त था। आखिरकार योजना बनी कि 29 सितम्बर को एक विशाल जुलूस निकाल कर विरोध–प्रदर्शित किया जाए। इसके लिए हाजरा ने गांव–गांव घूम कर 5 हजार से अधिक देशभक्तों को इकट्ठा किया। आजादी के मतवाले निश्चित दिन और समय पर सरकारी डाक बंगले की ओर बढ़ने लगे। जुलूस का नेतृत्व कर रही थी मातंगिनी हाजरा। डाक बंगले के पास बने एक चबूतरे पर वह एक हाथ में तिरंगा लेकर जोर–जोर से वंदेमातरम् के नारे लगवा रही थी। तभी एक अंग्रेज सिपाही की बंदूक से निकली गोली तिरंगा थामे उनके एक हाथ पर लगी। उन्होंने दूसरे हाथ में तिरंगा थामा और दोगुने जोश के साथ वंदेमातरम् का नारा लगाने लगी। दूसरी गोली दूसरे हाथ में लगी उसके बाद तीसरी गोली उनके माथे पर लगी और उनकी देह सदैव के लिए चिरनिद्रा में लेट गई।

हालांकि इस बलिदान के बाद स्थानीय देशभक्तों का हुजूम ऐसा उमड़ा कि उन्होंने अंग्रेजों को वहां से भागने के लिए मजबूर कर उस शहर को 21 माह तक अंग्रेजों से मुक्त रखा।

पिता ने मात्र 12 वर्ष की अल्प आयु में अपने से 50 वर्ष बड़े व्यक्ति से उनका विवाह करा दिया। कुछ समय बाद ही पति का देहांत हो गया। अपने ही परिवार के लोगों ने उन्हें घर से बाहर निकाल दिया। वह गांधी जी के आंदोलन–भाषणों में सक्रिय रहने लगी। महात्मा गांधी की अनुयायी हाजरा के स्वाधीनता आंदोलन के जज्बे को देखते हुए सब उनको 'बूढ़ी गांधी' कहने लगे थे। अपने प्रण के अनुसार उन्होंने जीवन भर चरखा काता और खादी पहनी।

कलकत्ता में कई स्कूलों, कॉलेजों, कॉलोनियों और रास्तों के नाम स्वाधीनता की इस अमर सेनानी के नाम पर रखे गए हैं। भारत सरकार ने वर्ष 2002 में भारत छोड़ो आंदोलन के 60 वर्ष पूर्ण होने पर मातंगिनी हाजरा के सम्मान में डाक टिकट जारी किया था। ● – मनोज गर्ग

श्रद्धांजलि

पूज्य शंकराचार्य जी का महाप्रयाण

ज्योतिर्मठ पीठ (बद्रीनाथ) एवं शारदा पीठ (द्वारका) के पूज्य शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद जी सरस्वती बीती 11 सितम्बर को ब्रह्मलीन हो गए। वे 99 वर्ष के थे और लंबे समय से बीमार चल रहे थे।

पाथेय कण परिवार पूज्य शंकराचार्य जी को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

अपनी कमाई का कुछ हिस्सा समाजोत्थान के लिए

संत दुलाराम कुलारिया सभागार का लोकार्पण

जयपुर स्थित केशव विद्यापीठ, जामडोली के परिसर में बीती 31 अगस्त को संत दुलाराम कुलारिया सुथार सभागार का लोकार्पण संघ के क्षेत्रीय प्रचारक श्री निम्बाराम और भामाशाह नरसी कुलारिया ने किया।

इस अवसर पर भामाशाह नरसी कुलारिया ने कहा कि संत दुलाराम अपनी कमाई का कुछ हिस्सा समाज के उत्थान पर खर्च करते थे। वे समाज में व्याप्त कुरीतियों को खत्म करने के लिए सदैव तत्पर थे। उन्होंने बालिका शिक्षा और उनके उच्च अध्ययन के लिए लगातार सहयोग किया। गो सेवा के लिए तो वे सदैव तैयार रहते थे। ज्ञात हो कि उक्त सभागार के निर्माता भामाशाह नरसी जी स्व.संत दुलाराम के सुपुत्र हैं और उन्हीं की प्रेरणा से आज भी पूरा परिवार विद्यालयों एवं गोशालाओं के विकास के साथ-साथ समाज सेवा के लिए सदैव तैयार रहता है।

सभागार का उद्घाटन करते हुए संघ के क्षेत्रीय प्रचारक श्री निबांराम, भामाशाह नरसी कुलरिया व अन्य अतिथिगण

समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री निम्बाराम ने परिसर के अन्दर किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि एक बार आह्वान करने पर भामाशाह नरसी जी ने सभागार के निर्माण के लिए सम्पूर्ण खर्च अपने द्वारा वहन किए जाने का संकल्प लिया और उसी स्वस्थ मन और दान की प्रवृत्ति के कारण उच्च तकनीकी सुविधाओं से युक्त सभागार का निर्माण किया। संस्था के अध्यक्ष जेपी सिंहल ने सभागार की लागत व अन्य विषयों की जानकारी साझा की। संस्था सचिव श्री ओमप्रकाश गुप्ता ने आगंतुकों का आभार प्रकट कर स्मृति चिन्ह प्रदान किए।

सामाजिक समरसता

सामाजिक समरसता की अनोखी पहल

वाल्मीकि परिवार से कराई पूजा व घर शुद्धि

अपनी माँ के स्वर्गवास के पश्चात् वाल्मीकि परिवार से घर की शुद्धि और पूजा कराने का अनुकरणीय समाचार आहोर (जालोर) के सांकरणा गांव से आया है।

सांकरणा गांव के राजपुरोहित परिवार के जबरसिंह, गोपालसिंह और अरविंदसिंह ने अपनी माताजी के स्वर्गवास के पश्चात् होने वाले कार्यक्रम में वाल्मीकि बन्धु जगदीश पुत्र धर्माजी के पूरे परिवार को घर के मुख्य आंगन में सम्मान सहित आमंत्रित कर भोजन कराया।

राजपुरोहित भाइयों के आग्रह पर इस वाल्मीकि परिवार ने धूपबत्ती जलाकर मकान के सभी भागों में जाकर पूजा भी की। राजपुरोहित भाइयों ने वाल्मीकि परिवार को सोने-चांदी के आभूषण, कपड़े, बर्तन व अन्य घरेलू सामान भेंट कर ससम्मान विदा किया।

एक भाई गोपाल सिंह राजपुरोहित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला धर्म जागरण संयोजक हैं। उनका कहना था कि हम सब एक ही हैं तथा सनातन समाज के सभी लोगों को इसका अहसास आवश्यक है। कार्यक्रम में बिशनगढ़ के प्रधानाचार्य सरदार सिंह चारण, जीतू, अमर सिंह, प्रकाश, बहिन संगीता आदि भी उपस्थित थे।

स्वातंत्र्य समर प्रश्नोत्तरी उत्तर-1. सरदार सोहन सिंह भकना 2. लक्ष्मी सहगल 3. भीखाजी रुस्तम कामा 4. भोजला 5. सरोजिनी नायडू 6. वर्ष 1906 7. चार 8. 18 वर्ष 9. 8 अगस्त,1942 10. भारत छोड़ो आंदोलन

आवश्यकता से अधिक जल का दोहन न करें, 'एएमसी' सूत्र पर करना होगा विचार

जल संवाद में आए सुझाव

- **पानी का करें न्यूनतम उपयोग**
- **पानी की रिसाइक्लिंग हो**
- **शुरुआत करें घर से**
- **जमीन में पानी जाने की जगह तो बनाएं**
- **बच्चों के टिफिन प्लास्टिक की बजाय स्टील के हों**

हमें भविष्य में जल चाहिए तो उसका दोहन करने से रोकना होगा। इसके लिए अपनी जीवनचर्या में एएमसी सूत्र पर कार्य करना होगा। **'ए' का अर्थ एक्सेस यूज पर नियंत्रण से है, वहीं 'एम' का अर्थ जल के मिनिमम यूज से है तथा 'सी' का अर्थ क्रिएटीविटी से है।** यह कहना था पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के राष्ट्रीय संयोजक श्री गोपाल आर्य का। वे बीती 28 अगस्त को उदयपुर में जल संवाद कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि हम आवश्यकता से अधिक जल का दोहन न करें, प्रयास यह करें कि किसी भी कार्य में किस प्रकार जल का कम से कम उपयोग हो सकता है और जीवनचर्या में जल को बचाने की रचनात्मकता का संचरण हो, अन्यथा हम उस स्थान पर आ चुके हैं जहां से लौटना संभव नहीं है। वह दिन दूर नहीं जब सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण चक्र की पुनर्स्थापना की बात कहने को मजबूर हो जाएगा।

श्री आर्य ने यह भी कहा कि हम स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, देश के 75 वर्षों के विकास की चर्चा कर रहे हैं तो **इस बात पर चिंतन होना चाहिए कि 75 वर्ष में गंगा मैली कर चुके हैं हम, सबसे ऊंचे कचरे के पहाड़ वाले देश हैं हम, पानी को बचाने के लिए संगोष्ठियां करने को विवश हैं हम। यह किसकी गलती है? जीव-जंतुओं ने पर्यावरण नहीं बिगाड़ा। वह मनुष्य ही है, जिसके कारण ये स्थितियां बनी हैं।** लेकिन अब परिस्थितियों के अनुरूप उन्हें परिभाषित करना आवश्यक हो गया है।

विद्या भवन के सीईओ श्री अनुराग प्रियदर्शी ने कहा कि विद्या भवन देश भर में जागृति के लिए एक वाटर सेंटर बनाने के लिए प्रयत्नशील है।

कर्नाटक पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन समिति के अध्यक्ष डॉ. श्रीहर्षा ने हर मोर्चे पर वाटर रिसाइक्लिंग की आवश्यकता पर जोर दिया। सीकर के डॉ. खेताराम कुमावत ने कहा कि जब हम पीने के पानी को तरसेंगे, तब खेती के लिए पानी कहां से लाएंगे। पानी को घी की तरह समझना होगा। पर्यावरणविद् व सुप्रीम कोर्ट में अधिवक्ता पुनीत शोरण ने कहा कि शुरुआत घर से करेंगे, तब हम अपने बच्चों को भी सीख दे सकेंगे।

जर्मनी में उदयपुर मूल की एडवोकेट भाग्यश्री पंचोली ने कहा कि उन्हें **अचरज होता है कि स्मार्ट सिटी में वॉल टू वॉल सीमेंटीकरण कर दिया गया। जमीन में पानी जाने की जगह ही नहीं रखी गई। एनजीटी के निर्देशों के बावजूद इस पर कोई गंभीर नहीं है।** उदयपुर के युवा कुशल ने प्लास्टिक का उपयोग कम करने के लिए सुझाव देते हुए कहा कि बच्चों के टिफिन स्टील के काम में लेने शुरू किए जाने चाहिए। यदि एक स्कूल भी ऐसा कर देता है तो कितना बड़ा बदलाव दृष्टिगत होगा।

कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. विलास जानवे के निर्देशन में जल के महत्व को दर्शाती 'मूक' नाटिका प्रस्तुत की गई।

जल संवाद में देशभर से आए जल चिंतकों के साथ उदयपुर में जल संरक्षण को लेकर कार्यरत गणमान्य नागरिकों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम उदयपुर वाटर फोरम तथा विद्या भवन पॉलिटेक्निक व पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया था।

कुटुम्ब प्रबोधन

अपना घर भक्तिमय, आनंदमय, प्रेममय तथा शांतिमय बनाना है

जोधपुर महानगर का प्रथम कुटुंब दंपत्ति अभ्यास वर्ग सम्पन्न

अपना घर भक्तिमय, आनंदमय, प्रेममय तथा शांतिमय बनाना है, इसके लिए कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना होगा- अच्छा देखना, अच्छा सुनना व अच्छा करना, यह कहना है अखिल भारतीय कुटुंब प्रबोधन संयोजक डॉ.रविन्द्रशंकर जोशी का। वे बीते दिनों जोधपुर महानगर के प्रथम कुटुंब दंपत्ति अभ्यास वर्ग को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि एक-एक कर बुरी आदत को छोड़ना व अच्छी आदत को बनाएं रखना यह चलते रहना चाहिए। वर्तमान में मोबाइल के बढ़ते प्रयोग पर उनका कहना था कि मोबाइल का समझदारी व विवेक से उपयोग करना व बच्चों से करवाना चाहिए। परिवार में छोटी-छोटी समस्याओं से ऊपर उठने का उपाय सोचना, व्यायाम व योग द्वारा घर को तनाव, दबाव तथा विवाद मुक्त रखना तथा परिवार में पूजा, परम्परा आदि को जीवन में उतारना वर्तमान समाज की जरूरत है।

अभ्यास वर्ग में संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री नंदलाल जोशी (बाबाजी) ने 'घर-घर आनंद आएगा, घर-घर मंगल छाएगा।' परिवार गीत गाकर सभी को मंत्र मुग्ध किया।

स्वधर्म, स्वदेश, स्वभाषा व अछूतोद्धार भी था स्वाधीनता आंदोलन का उद्देश्य

स्वावलंबन, स्वधर्म, स्वदेश, स्वभाषा और अछूतोद्धार भी स्वाधीनता आंदोलन का उद्देश्य रहा है। यह कहना है वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.नंदकिशोर पाण्डेय का। वे 4-5 सितम्बर को अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की बीकानेर इकाई द्वारा आयोजित 'भारत का स्वाधीनता आंदोलन एवं साहित्य' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे।

परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष डॉ. अन्नाराम शर्मा ने कहा कि स्वाधीनता के अमृत महोत्सव को मनाने की सार्थकता तभी होगी जब देश की युवा पीढ़ी स्वाधीनता संग्राम और उसमें विभिन्न भूमिकाओं को निभाने वाले सेनानियों को जाने-समझें, इसलिए साहित्य की बात की जानी आवश्यक है। देश भर के साहित्यकारों की साहित्य रचनाओं का जिक्र करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि इन्हीं के कारण साम्राज्यवादी ताकतों की चूलें हिला दी गई थीं।

आशीर्वचन देते हुए बीकानेर के लालेश्वर महादेव मठ के महंत विमर्शानंद गिरि ने कहा कि साहित्य समाज की आत्मा है। साहित्यकार को सदैव तीसरी आंख खुली रखनी चाहिए।

दो दिवसीय इस संगोष्ठी में पत्रकारिता, लोकगीत, जप्त साहित्य तथा आंदोलन को गति देने वाले साहित्य पर दिल्ली, नोएडा, इंदौर, भोपाल, जोधपुर, उदयपुर तथा कोटा से आए ख्यातिनाम साहित्यकारों व विचारकों ने अपनी बात रखी।

समाज तोड़ने में लगी हैं विघटनकारी ताकतें, प्रबुद्धजन आएं आगे

सागवाड़ा। हिंदू समाज का कोई भी अंग कमजोर नहीं होना चाहिए क्योंकि आजकल विघटनकारी शक्तियां समाज और राष्ट्र को तोड़ने का कुत्सित प्रयास कर रही हैं जिसे नाकाम करने में प्रबुद्धजनों की भूमिका रहती है। चाहे हमारी संयुक्त परिवार की प्रणाली को खत्म करने पर तुली हों, चाहे अंग्रेजों द्वारा लिखे गए झूठे इतिहास को सत्य साबित करने का प्रयत्न कर रहे हों, चाहे स्वदेशी वस्तुओं में गुणवत्ता को लेकर विदेशी वस्तुओं का उपयोग करने पर तुली हों, ऐसी ताकतों से हमें सचेत रहते हुए इनके प्रयत्न रोकने चाहिए। यह उद्गार सागवाड़ा में संघ द्वारा आयोजित प्रबुद्ध जन सम्मेलन को संबोधित करते हुए संघ के क्षेत्र प्रचार प्रमुख श्री महेंद्र सिंघल ने व्यक्त किए।

उन्होंने यह भी कहा कि अंग्रेजों द्वारा लिखवाए गए असत्य व मनगढ़ंत इतिहास के कारण वागड़ का प्रसिद्ध तीर्थ मानगढ़ धाम जो जलियांवाला बाग नरसंहार से भी बड़े नरसंहार का साक्षी रहा लेकिन उसे राष्ट्रीय स्मारक अभी तक घोषित नहीं किया गया। 'वसुधैव कुटुंबकम्' हमारे शास्त्रों में कहा है लेकिन आज प्रबुद्धजनों को चिंतन करना चाहिए कि वसुधैव कुटुंबकम् वाली भारत माता का क्या हाल हुआ है। हमारी श्रेष्ठ परंपरा संयुक्त परिवार लगभग समाप्त सी हो गई है, इसे पुनर्जीवित करना समाज का कार्य है। आज दादा-दादी, चाचा-चाची, ताऊ-ताई का स्नेह और वात्सल्य बच्चों को मिलता ही नहीं है जिससे आज का बालक डिप्रेशन में आता है और अपनी सूझबूझ खो बैठता है। स्वदेशी के प्रति गंभीरता हमारे देश प्रेम को दर्शाती है। हमें स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए ताकि भारत के सामने आर्थिक गुलामी का संकट नहीं आए। अध्यक्षता करते हुए रामस्नेही संप्रदाय, मेड़ता की साध्वी अनुराग ज्योति ने अपने उद्बोधन में कहा कि जो सौभाग्यशाली होते हैं उन्हें ही देश व समाज की सेवा करने का शुभ अवसर प्राप्त होता है। यह सौभाग्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के देव तुल्य स्वयंसेवकों को प्राप्त है।

मौलाना पर वाल्मीकि महिलाओं पर अभद्र टिप्पणी का आरोप- दर्ज कराया परिवाद

अम्बेडकर मिशन ने मौलाना जर्जिस अंसारी पर अनुसूचित वर्ग की महिलाओं के बारे में अभद्र और अपमानजनक टिप्पणी करने का आरोप लगाया है। बताया जाता है कि हाल ही में मौलाना अंसारी के अधिकृत मीडिया अकाउंट पर एक ऐसा वीडियो शेयर किया गया है जिसमें मौलाना वाल्मीकि समाज की महिलाओं को बदसूरत, गन्दापन जैसे हीनतर प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करता दिखाई दे रहा है।

अंबेडकर मिशन के प्रदेश संयोजक ने बताया कि मौलाना की उक्त टिप्पणी के विरुद्ध प्रदेशभर के अनुसूचित समाज में तीखी प्रतिक्रिया हुई है। मौलाना की टिप्पणी से आहत अमित सामरिया, सुनील वाल्मीकि, हरीश महावर, अजय पारीक सहित बड़ी संख्या में अनुसूचित व अन्य समाज के लोग थाने पहुँचे तथा परिवाद प्रस्तुत कर मौलाना की तत्काल गिरफ्तारी की मांग की।

शुष्क क्षेत्र के सतत विकास हेतु जल संरक्षण व पेड़ लगाकर टिकाऊ खेती को बढ़ाया जा सकता है

केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत का कहना है कि खेती के 'प्रति व्यक्ति घटते रकबे' के चलते साझा खेती की आवश्यकता है। इसी को लेकर कृषक उत्पादक संगठनों के गठन पर जोर दिया जा रहा है। किसानों को फसल विविधिकरण अपनाते हुए सरप्लस उत्पादन वाली फसलों से वैश्विक मांग अनुसार उत्पादन बढ़ाना होगा। अतः शुष्क क्षेत्र के सतत विकास हेतु जल संरक्षण व पेड़ लगाकर टिकाऊ खेती को बढ़ाया जाना चाहिए। केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्री श्री कैलाश चौधरी ने मोटे अनाज के उत्पादन को अपनाने की आवश्यकता तथा कृषि प्रसंस्करण पर जोर दिया।

परमहंस रामप्रसाद जी महाराज ने बदलते मौसम परिस्थितियों के अनुसार शुष्क क्षेत्र में सतत कृषि विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। भारतीय किसान संघ के अ.भा. संगठन मंत्री दिनेश कुलकर्णी ने देशभर में किसान संघ द्वारा चल रहे कार्यों से उपस्थित लोगों को अवगत कराया।

'शुष्क क्षेत्र में सतत कृषि विकास' को लेकर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भारतीय शुष्क क्षेत्र में मरुस्थलीकरण, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, उत्पादन बढ़ाने के लिए पशुधन प्रबंधन जैसे विषयों पर कृषि विशेषज्ञों तथा प्रगतिशील किसान बंधुओं ने अपने विचार रखे। डॉ.आरएस कुमावत ने शुष्क क्षेत्र में चारा जैसे नेपियर (घास), सहजन, कांटे रहित थोर, नागफनी, धामण, सेवण, रंजका, जिंझुआ, शंखपुष्पी के अधिक उत्पादन के संदर्भ में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भारतीय किसान संघ, भारतीय एग्रो इकोनॉमिक रिसर्च सेंटर तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के द्वारा किया गया था।

किसान को मजबूत कर उनका हक दिलाना ही किसान संघ का एक मात्र लक्ष्य

भारतीय किसान संघ के प्रांत महामंत्री डॉ.सांवरमल सोलेट का कहना है कि अंतिम किसान को मजबूत कर उसका हक दिलाना ही किसान संघ का लक्ष्य है। जयपुर प्रांत द्वारा आयोजित अभ्यास वर्ग में बोलते हुए किसान संघ की राष्ट्रीय महिला प्रमुख श्रीमती मंजू दीक्षित ने कहा कि किसान संघ हर कार्यकर्ता को नेता बनाकर तैयार करता है, जो गांव विकास के लिए अधिकारियों की आंखों में आंख डालकर अपनी बात रख सके। पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के प्रांत संयोजक श्री अशोक कुमार शर्मा ने कहा कि किसानों को अपनी परम्परागत तकनीक के साथ आधुनिक तकनीक का भी खेती में उपयोग करना चाहिए।

छात्रसंघ चुनावों में खतरे की घंटी आपको सुनाई दी क्या?

पिछले दिनों राजस्थान प्रदेश के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में सम्पन्न छात्रसंघ चुनावों के कुछ संकेत हर राष्ट्रवादी के लिए चिंताजनक हैं।

पाकिस्तान जिंदाबाद– पाली जिले के मारवाड़ जंक्शन के कॉलेज में एनएसयूआई प्रत्याशी फिजा खान की जीत पर निकाली गई रैली में कथित तौर पर 'पाकिस्तान जिंदाबाद' के नारे लगाए गए। इसका एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। ऐसा क्यों हुआ? क्या एक मुस्लिम विद्यार्थी की विजय का अर्थ पाकिस्तान की विजय मानी जाएगी? झारखंड, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश आदि राज्यों के पंचायत व नगर पालिका चुनावों में भी ऐसे दृश्य दिखाई देने के आरोप हैं जब किसी मुस्लिम प्रत्याशी की विजय पर कथित रूप से पाक समर्थक नारे लगे।

भारत के संविधान में पंथ निरपेक्षता (सेकुलरिज्म) की बात होने के बावजूद सरकारें मुस्लिम समुदाय को आगे बढ़ाने के लिए कई प्रकार की योजनाएं केवल उन्हीं के लिए लागू कर रही हैं तथा उनके उत्थान के विशेष प्रयास किए जा रहे हैं, फिर भी एक मुस्लिम प्रत्याशी की जीत पर पाकिस्तान जिंदाबाद का नारा लगाने के पीछे की मानसिकता क्या है? इसे समझने की आवश्यकता है।

समाज तोड़क– अनुसूचित जनजाति वर्ग के उत्थान के लिए भी केन्द्र और राज्य सरकारें सतत प्रयत्नशील हैं। आरक्षण से लेकर छात्रवृत्तियां देने तक इस वर्ग के विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की सुविधाएं दी जा रही हैं तथा हिंदू समाज के सैकड़ों लोग व कई संस्थाएं इस वर्ग के विकास हेतु सतत कार्यरत हैं तो भी छात्रसंघ चुनावों में बांसवाड़ा और डूंगरपुर जैसे जनजाति बहुल इलाकों में एक पृथकतावादी संगठन 'भारतीय ट्राइबल पार्टी' से जुड़े 'भील प्रदेश विद्यार्थी मोर्चा' की जीत किसी खतरे की घंटी से कम नहीं है। बीटीपी यानि भारतीय ट्राइबल पार्टी ने पूरे क्षेत्र में जनजाति समाज को हिंदू मान्यताओं और हिंदू समाज से अलग करने के जो प्रयत्न किए हैं वे किसी से छिपे नहीं हैं। उनके इस काम में सहयोग देने के लिए झारखंड जैसे प्रदेशों से ईसाई मिशनरीज यहां आकर सक्रिय देखे गए थे।

शारदीय नवरात्र

ऊर्जा और शक्ति के प्रतीक नवरात्रि पर्व-वर्ष में चार बार चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ माह में आते हैं। नवरात्र अर्थात् 9 विशेष रात्रियां। आषाढ़ व माघ में आने वाले नवरात्र गुप्त नवरात्र के नाम से जाने जाते हैं। शेष दो जिन्हें प्रकट नवरात्र कहा जाता है, चैत्र व आश्विन माह में आते हैं। चूंकि आश्विन माह से शरद ऋतु प्रारंभ हो जाती है इसलिए इसे शारदीय नवरात्र कहते हैं। चैत्र के वासन्तिक नवरात्र के अन्त में श्रीरामनवमी तथा शारदीय नवरात्र की महानवमी के पश्चात् दशहरा अर्थात् विजयादशमी पर्व आता है। 9 दिनों का यह पर्व आद्य शक्ति के नौ रूपों की साधना के साथ-साथ शक्ति, आरोग्य तथा आयुष्य का प्रदाता है।

गुजरात का डांडिया- गरबा तथा पश्चिम बंगाल की दुर्गा पूजा इस पर्व का विशेष आकर्षण है। इन दिनों में देवी की शक्तिपीठों तथा सिद्धपीठों पर भारी मेले लगते हैं। नवरात्रि की महाअष्टमी या महानवमी के दिन घर-घर में कन्या पूजन कर उन्हें भेंट देने की परम्परा है। देवीभागवत पुराण के अनुसार नव कन्याओं को नव दुर्गा का प्रत्यक्ष विग्रह बताया गया है जिसे हमारे ऋषि-मुनियों ने मातृ-शक्ति के सम्मान, आदर तथा सुरक्षा के प्रण का प्रतीक बताया है। यह 9 दिन का समय व्यक्ति समाज के लिए आत्मनिरीक्षण, आत्मशुद्धि तथा पारम्परिक रूप से नए उद्यम शुरू करने का उत्तम समय माना गया है। शास्त्रों के अनुसार देवी दुर्गा ने आश्विन माह में महिषासुर राक्षस पर आक्रमण कर 9 दिनों तक युद्ध किया और 10वें दिन लोकहित हेतु उसका वध किया। इसलिए इन 9 दिनों को शक्ति आराधना के लिए समर्पित किया गया।

धर्मग्रंथों के अनुसार भगवान राम ने लंका पर आक्रमण से पहले 9 दिन तक रामेश्वरम् में देवी भगवती की आराधना कर लंका विजय का वरदान प्राप्त किया था। इस बार यह महापर्व 26 सितम्बर से 5 अक्टूबर,2022 के मध्य मनाया जाएगा।

राजस्थान की अपनी भाषा में संवाद एवं विचार-अभिव्यक्ति

आपणा लोक देवता

● डॉ. भँवर कसाना

आपणा लोक देवता आपरै बखत मांय हरावल रैयर समाज री अबखायां मेटण वास्तै आपरो जीवण निवछावर करण आळा महापुरख हा। लोक मांय आं रै वास्तै सदा अणूती सरधा अर आस्था रिवी है। आं रा धाम आपणै अठै लोक-तीरथ मान्या जावै। अे धाम ठेठ गांव-ढ़ाणी तांई थान, देवळ, देवरा अर चूंतरा रै रुप मांय थरप्योड़ा मिलै। अठै किणी रै वास्तै कोई रोकटोक नीं, कोई भेदभाव नीं। अठै सगळा इकसार है। सगळा सरधा भाव सूं ढूकै। अे लोक-तीरथ जुगां जुगां सूं जण-जण नै सगती, सौराई अर समरिधी देवता रिया है।

आं मांय सूं कैई धरम री रखोप वास्तै आपरै प्राणां री आहुति दिवी तो कैई गायां री रखोप मांय आपरा प्राण होम दिया। कैई भेदभाव अर कुरीतां नै मेटर समरस समाज री थापना वास्तै आपरो जीवण खपाय दियो तो कैई अखंड आस्था नै थिर राखण वास्तै भगती मारग नै सोरो करण री जुगत मांय लाग्या रिया। आपणा अे सगळा लोक देवता आपरै बखत रा वीर जोधा हा। कोई धरमवीर, कोई करमवीर तो कोई दानवीर। आं रो सूरापण ई आं नै जगत मांय पुजवाया। आं री गुरबी गाथावां लोक मांय घणै चाव सूं गाई जावै। बियां तो राजस्थान रै हरैक अंचल रा आपरा मानीता लोक देवता है पण कैई घणा मानीता है। जियां उतरादे रा गोगाजी, आथूणै रा रामदेवजी, पाबूजी, तेजाजी, हरिराम बाबा, मल्लीनाथजी, दिखणादे रा देवनारायणजी अर कल्लाजी तो अगूणे रा देव बाबा। आं री मानता आखै राजस्थान रै सागै देस-दिसावरां तांई है। भादवा रा महिना मांय आं लोकदेवतावां रा थानां माथै लखी मेळा भरीजै। आं मेळां मांय अळगै-अळगै सूं सरधालु जातरी उबाणा-उपाळा आप आपरी मन्नत मानता सागै पूगै। भादवो राजस्थान मांय लोक आस्था रो महिनो है। इण महिने अठै रो हरैक मारग लोक धुनां अर लोक भजनां माथै थिरकतो निंगै आवै।

(लेखक राजस्थानी भाषा के साहित्यकार हैं)

रेखांकित शब्दों के अर्थ- **चूंतरा**-चबूतरा, **थरप्योड़ा**-स्थापित, **इकसार**-बराबर, **ढूकै**-आते हैं, **सौराई**-खुशहाली, **हरावल**-अग्रणी, **अबखायां**-कमियां, **थापना**-स्थापना, **खपाय**-उत्सर्ग, **थिर**-स्थिर, **सोरो**-सरल, **गुरबी**-गौरवमयी, **उतरादे**-उत्तर, **आथूणै**-पश्चिम, **दिखणादे**-दक्षिण, **अगूणै**-पूर्व, **थानां**-स्थान, **उबाणा-उपाळा**-नंगे पैर-पैदल

शिक्षा नीति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत भक्ति युक्त, कौशल विकास तथा सामाजिक जन-जागरण की दृष्टि से मील का पत्थर सिद्ध होगी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति कमजोर एवं पिछड़े समाज को आगे बढ़ाने वाली शिक्षा नीति है। यह शिक्षा नीति देश की अपेक्षाओं के अनुरूप है। यह कहना है विद्या भारती के राष्ट्रीय सह मंत्री डॉ.संतोष आनंद का।

मुख्य वक्ता ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति उस दिशा में आगे बढ़ने का एक राष्ट्रीय प्रयास है। इसकी क्रियान्विति में सम्पूर्ण समाज का सहयोग चाहिए। इस शिक्षा नीति का उद्देश्य भारत भक्ति युक्त आदर्श समाज का निर्माण करना है। इसके क्रियान्वयन से आत्मनिर्भर, सक्षम एवं सुदृढ़ भारत का निर्माण होगा। डॉ. आनंद ने यह भी कहा कि वर्तमान की शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है इसलिए स्वतंत्रता के बाद भारत पर गर्व करने वाली समाज आधारित शिक्षा नीति देश को प्राप्त हुई है। यह शिक्षा

नीति कौशल विकास, समग्र मूल्यांकन, सामाजिक जनजागरण की दृष्टि से मील का पत्थर साबित होगी।

वे बीती 3 सितम्बर को कोटा स्थित स्वामी विवेकानन्द विद्या निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित विद्या भारती के प्रांतीय प्रबंध समिति सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे।

बाल श्रद्धा

वाल्मीकि बस्ती के बालक कृष्ण, वासुदेव, देवकी व राधा की वेशभूषा धारण कर देव झूलनी एकादशी उत्सव में हुए शामिल (बड़ी सादड़ी-चित्तौड़गढ़, 10 सित., 2022)

जन सैलाब

मतांतरण व लव-जिहाद के विरुद्ध हजारों युवाओं ने जयपुर में निकाली रैली (11सित.,2022)

'हेडगेवार स्मृति प्रन्यास', अजमेर की ओर से साहसिक देशी खेलों का आयोजन (11 सित.,2022)

गर्जना-2022

सफाई कर्मचारी पर जायरीनों का चाकू से हमला

चित्तौड़ की दीवानशाह दरगाह के उर्स में आए 8-9 जायरीन ने सुलभ शौचालय में कार्यरत सफाई कर्मचारी पर चाकू से हमला किया। वाल्मीकि समाज के साथ सर्व हिंदू सभा द्वारा विरोध प्रदर्शन व गिरफ्तारी की मांग (6 सितम्बर, 2022)।

जनसंख्या संतुलन पर पूर्वोत्तर में संकट

पूर्वोत्तर राज्य मिजोरम में 30 हजार से अधिक म्यांमार के शरणार्थी बढ़ने से राज्य में जनसंख्या संतुलन पर संकट बढ़ा। (6 सितम्बर, 2022)

व्यापारियों द्वारा चीनी उत्पादों का बहिष्कार

जयपुर व्यापार मण्डल व जयपुर विकास संयुक्त महासमिति ने चीन निर्मित उत्पादों के बहिष्कार एवं विदेशी ऑनलाइन कंपनी की दोषपूर्ण नीतियों के खिलाफ जन-जागरण अभियान की शुरुआत की। (10 सितम्बर,2022)

एक और भारतीय पहुँचे शीर्ष पर

दुनिया की सबसे बड़ी विज्ञापन कंपनी 'ओगिल्वी' की नई सीईओ भारतीय मूल की देविका बुलचंदानी होगी। (10 सितम्बर,2022)

श्रद्धा का सैलाब

- गणेश चतुर्थी (31 अगस्त) पर जयपुर स्थित मोती डूंगरी गणेशजी मंदिर में 14 लाख श्रद्धालुओं ने दर्शन किए।(1 सित.,2022)
- बाबा रामदेव के 638वें भादवा मेले (29 अगस्त से 5 सितम्बर) में 25 लाख श्रद्धालुओं ने दर्शन किए। (6 सितम्बर,2022)

दक्षिण के सुपर स्टार ने 10 करोड़ का 'शराब' का विज्ञापन करने से किया मना जबकि बॉलीवुड अभिनेता कर रहे हैं धड़ल्ले से प्रचार

कई बार फिल्मी सितारे ऐसा कुछ कर गुजरते हैं जिससे वे रील लाइफ के अलावा रियल लाइफ में भी हीरो बन जाते हैं। ऐसा ही ताजा उदाहरण है दक्षिण के सुपर स्टार अल्लू-अर्जुन का।

अल्लू-अर्जुन जिन्हें उनकी हाल ही की प्रदर्शित फिल्म 'पुष्पा' की लोकप्रियता ने आसमां पर बिठा दिया है, ने एक शराब कंपनी का 10 करोड़ का विज्ञापन महज यह कहकर करने से मना कर दिया कि वे नहीं चाहते कि उनके प्रशंसक इस प्रकार का विज्ञापन देखकर शराब पीना शुरू कर दें। उनका यह भी मानना है कि जिस का सेवन वे स्वयं नहीं करते, उसे प्रमोट क्यों करें।

बता दें कि अल्लू अर्जुन टेलीविजन विज्ञापनों में काफी पसंद किए जाने वाले अभिनेता हैं। वे निजी जीवन में पर्यावरण के समर्थक भी हैं। इससे पूर्व अप्रैल माह में वे एक तम्बाकू कंपनी का विज्ञापन करने से मना कर चुके हैं? वहीं दूसरी ओर बॉलीवुड जो कि पूरी तरह से सेकुलर जमात और राष्ट्र विरोधियों के आगोश में अपना अस्तित्व बनाए हुए है, के लोकप्रिय अभिनेता पान-मसाला, गुटखे, शराब, खैनी का विज्ञापन करने में अपनी शान समझते हैं, जबकि उक्त मादक पदार्थों पर स्पष्ट रूप से चेतावनी लिखी होती है-इसके सेवन से कैंसर होता है जो कि एक जानलेवा बीमारी है।

पिछले दिनों हुए एक सर्वे में बताया गया कि 90 प्रतिशत से अधिक मुख के कैंसर का कारण तम्बाकू एवं तम्बाकू से तैयार उत्पादों का सेवन है। तम्बाकू या मादक पदार्थ न केवल कैंसर, बल्कि दिल की बीमारी व स्ट्रोक के लिए भी जिम्मेदार माने गए हैं। सस्ती लोकप्रियता और चंद रुपयों के लिए अपने प्रशंसकों के जीवन से खिलवाड़ उचित प्रतीत नहीं होता है। अल्लू-अर्जुन से उन्हें इस मामले में कम से कम यह तो सीखने की जरूरत है।

गीता दर्शन

श्रीकृष्ण कहते हैं–

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत।। (16/3)

तेज, क्षमा, धैर्य, बाहर की शुद्धि एवं किसी में भी शत्रु भाव का न होना और अपने में पूज्यता के अभिमान का अभाव– हे अर्जुन! ये सब तो दैवीय सम्पदा को लेकर उत्पन्न हुए पुरुष के लक्षण हैं।

आओ संस्कृत सीखें - 8

हिन्दी	संस्कृत
● इस समय मुझे जाना है।	– इदानीं मया गन्तव्यम्।
● रूकिए, भोजन करके जाइए।	– तिष्ठतु, भोजनं कृत्वा गच्छतु।
● नहीं,इस समय भोजन नहीं करूँगा।	– न, इदानीं भोजनं न करोमि।
● नहीं,भोजन का समय है।	– न, भोजनस्य समयः।

कुकिंग टिप्स

● पकौड़े को ज्यादा कुरकुरा और टेस्टी बनाने के लिए उसके घोल में थोड़ा सा गर्म तेल और एक चुटकी अरारोट डाल दें।

गौरव के क्षण

- बीती 1 सितम्बर को गर्भाशय कैंसर की रोकथाम के लिए स्वदेशी वैक्सीन लांच की गई। देश में बना पहली बार यह टीका 'सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया' ने बनाया है।
- केन्द्र सरकार ने निर्णय लिया है कि स्वदेशी लड़ाकू विमान 'तेजस' विदेशी विमान जगुआर और मिग-29 का स्थान लेगा।
- भारत-पाकिस्तान बॉर्डर क्षेत्र में अंतिम एक हजार गांवों को जोड़ने के लिए 460 किमी लंबा 'भारत माला हाईवे' बन कर तैयार। आम जन के आवागमन के साथ सैन्य सुविधा व युद्ध के समय लड़ाकू विमान उतारने में सक्षम।
- 17 वर्षीय युवा भारतीय रमेश बाबू प्रज्ञानानंद ने 5 बार के विश्व शतरंज चैंपियन रहे नार्वे के मैग्नस कार्लसन को 4-2 से हराया।

वह नारी है रणचंडी माँ दुर्गा

● ओमप्रकाश राजपुरोहित 'प्रखर'

कभी दुर्गा तो कभी अहिल्या बन जाती है,
कभी जौहर व्रत कर पद्मिनी हो जाती है
निज पुत्र कर बलिदान कभी वह पन्नाधाय बन जाती है
तो कभी शत्रुओं के समक्ष पर्वत सी तन जाती है
वह नारी है रणचंडी माँ दुर्गा,
जो नभ को छू कर कल्पना बन जाती है ।

संहारक बन कभी असुरों के प्राण हरती है,
तो कभी ममता की मूरत हो जाती है
रक्त पिपासु होकर रण में शत्रुओं का लहू पी जाती है।
वह नारी है रणचंडी माँ दुर्गा,
जो वैरियों के वक्ष चीरने हेतु लक्ष्मीबाई बन जाती है।।

कभी माँ सीता तो कभी भगवद् सी गीता हो जाती है
स्वतंत्रता समर में कभी सरोजिनी,
तो कभी कृष्ण की मीरा हो जाती है
कभी इंदिरा बन शत्रु के टुकड़े करती है,
तो कभी सुषमा बन जीवन पुष्प चढ़ाती है
वह नारी है रणचंडी माँ दुर्गा,
जो बछेंद्री बन हिमालय को बौना कर जाती है।

– कक्षा– बारहवीं, आदर्श विद्या मंदिर, भीनमाल, जालोर

घरेलू नुस्खा

आवश्यकतानुसार मुलेठी को पीस कर चूर्ण बना लें और उसमें बराबर मात्रा में शहद मिलाकर छालों पर लगाने से दर्द में आराम मिलता है तथा धीरे-धीरे छाले ठीक होने लगते हैं।

हमारे मंत्र /प्रार्थना-7

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाग्भवेत्।

सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े।

वायु सेना दिवस (8 अक्टूबर)

आज से 90 वर्ष पूर्व भारतीय वायु सेना की स्थापना 8 अक्टूबर,1932 को की गई थी। स्वतंत्रता से पूर्व इसे रॉयल इंडियन फोर्स के नाम से जाना जाता था। स्वाधीनता के पश्चात् (1950 में पूर्ण गणतंत्र घोषित होने पर) 'रॉयल'शब्द हटाकर 'इंडियन एयर फोर्स' नाम किया गया। भारतीय वायुसेना विश्व की चौथी (अमरीका, चीन व रूस) सबसे बड़ी वायुसेना है। इसका ध्येय वाक्य है–'नभः स्पृशं दीप्तम्' (आकाश को स्पर्श करने वाले देदीप्यमान) जो श्रीमद्भगवद्गीता के 11वें अध्याय से लिया गया है।

विश्व डाक दिवस (9 अक्टूबर)

डाक सेवाओं के महत्व को उजागर करने, डाक विभाग के उत्पाद के बारे में जानकारी देने तथा ग्राहक व डाक घरों के बीच आपसी सामंजस्य स्थापित करने के लिए दुनिया भर में विश्व डाक दिवस प्रतिवर्ष 9 अक्टूबर को मनाया जाता है।

बोध कथा

व्यापार और सेवा

एक सेठ के पास एक ग्राहक कुछ सामान लेने के लिए आया। उसने जितने का सामान लिया उसमें दस रुपये कम पड़ गए तो सेठ ने कहा, '' कुछ सामान कम कर देता हूँ, मैं उधार नहीं देता हूँ।''

ग्राहक को सेठ की बात बुरी लगी, बोला, ''मेरे घर पर तीन दिन से खाना नहीं बना है, मेरा परिवार भूखा है और आपको रुपयों की पड़ी है।''

सेठ ने कहा, ''थोड़ी देर रुको, घर से सेठानी को कह कर भोजन की थाली लगवा कर लाए और बोले पहले भोजन करो तथा जाते समय बच्चों के लिए भी भोजन ले जाना।''

उस व्यक्ति के जाने के बाद सेठ के बच्चों ने पूछा, ''पिताजी! ये कैसा व्यवहार, दस रुपये कम पड़ने पर तो आपने उसका सामान कम कर दिया और बाद में भरपेट भोजन तो करवाया ही साथ में और भोजन भी बांध दिया। आखिर ऐसा क्यों?''

सेठ भी खानदानी था, बोला,'' बच्चो! हमेशा ये सीख याद रखना कि व्यापार करते समय दया मत करो और सेवा करते समय व्यापार मत करो।''

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी -25)

(कृपया अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो भी वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )

4.( ) 5.( ) 6.( )

7.( ) 8.( ) 9. ( )

10.( )

नाम .....

पिता का नाम.....

उम्र ..... पूर्ण पता .....

.....

.....पिन.....

मोबाइल नं. .....

बाल प्रश्नोत्तरी -25

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! 1 सितम्बर का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 79765 82011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - 5 अक्टूबर, 2022**

1. जैन समाज का सर्वोच्च तीर्थ स्थल 'सम्मेद शिखर' किस राज्य में स्थित है?
(क) झारखण्ड (ख) बिहार (ग) मध्यप्रदेश (घ) राजस्थान

2. बीकानेर बॉर्डर पर जवानों को रक्षा सूत्र किस संगठन द्वारा बांधे गए?
(क) सेविका समिति (ख) सेवा भारती (ग) विद्या भारती (घ) सीमाजन कल्याण समिति

3. माता अमृतानंदमयी ट्रस्ट द्वारा फरीदाबाद में संचालित नवनिर्मित अस्पताल का नाम क्या है?
(क) आरोग्य अस्पताल (ख) संजीवनी अस्पताल (ग) अमृता अस्पताल (घ) निरोगधाम

4. विश्व कुश्ती चैंपियनशिप (अंडर-20) स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय महिला पहलवान कौन है?
(क) साक्षी मलिक (ख) अंतिम पंघाल (ग) गीता फोगाट (घ) बबीता कुमारी

5. प्रसिद्ध क्रांतिकारी भगत सिंह की जयंती कब मनाई जाती है?
(क) 28 सितम्बर (ख) 27 सितम्बर (ग) 20 सितम्बर (घ) 15 सितम्बर

6. पहली बार भारतीय तिरंगा जर्मनी में फहराने वाली महिला कौन थी?
(क) सरोजिनी नायडू (ख) सिस्टर निवेदिता (ग) दुर्गा भाभी (घ) मैडम कामा

7. सुभाष बोस के घर से निकलने की योजना में शामिल भतीजे का नाम क्या था?
(क) सोमेन्द्र बोस (ख) शिशिर बोस (ग) अरविन्द बोस (घ) समीर बोस

8. हाल ही में संघ द्वारा प्रारंभ किए गए नए सेवा प्रकल्प का नाम क्या है?
(क) अपना घर (ख) सुयश (ग) सेवायाम् (घ) संकल्प

9. भारतीय परिवार व्यवस्था हेतु कार्यरत संघ की गतिविधि कौन सी है?
(क) परिवार प्रबोधन (ख) समाज प्रबोधन (ग) कुटुम्ब प्रबोधन (घ) संस्कार प्रबोधन

10. प्रसिद्ध पटकथा लेखक विजयेंद्र प्रसाद ने किस संगठन पर फिल्म बनाने की घोषणा की है?
(क) विश्व हिन्दू परिषद (ख) रा.स्वं.संघ (ग) सेवा भारती (घ) राष्ट्र सेविका समिति

बाल प्रश्नोत्तरी -22 के परिणाम

अक्षरा | सरोज | गुरु | भाविता | श्यामसुन्दर

1. अक्षरा गुप्ता, टोंक फाटक,जयपुर
2.सरोज,पलीना, फलौदी, जोधपुर
3. गुरु अमरावत, डोरे नगर, उदयपुर
4. भाविता सिंघवी, काशीपुरी, भीलवाड़ा
5. श्यामसुन्दर, रामगढ़,अलवर
6. टीना सैनी, अलावड़ा, रामगढ़, अलवर
7. कुलदीप धोका, बिलाड़ा, जोधपुर
8.सुमन राठौड़, केलनोर, चौहटन, बाड़मेर
9. उज्ज्वल सेन, रावतभाटा,कोटा
10.तेजस गुप्ता, महावीर नगर 2, कोटा

प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं।

सही उत्तर 1.(क) 2.(क) 3.(ख) 4.(घ) 5.(क) 6.(ख)7.(ग) 8.(क) 9.(ग) 10.(क)

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

30

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

18 जनवरी,1941 की रात को दिल्ली पहुँचे... वहां से फ्रंटियर मेल से पेशावर के लिए रवाना हुए...

पेशावर केन्ट उतर कर वे एक होटल में जियाउद्दीन नाम से ठहरे।... उनके एक सहयोगी 'भगतराम तलवार' को यह जानकारी थी

सुभाष जी ने भारत से निकलने की योजना बहुत पहले तय कर ली थी

भगतराम दो दिन बाद उनसे मिलने पहुँचे...

अफगानिस्तान के रूसी दूतावास के माध्यम से रूस जाना चाहते थे सुभाष

अगली यात्रा दुर्गम व पथरीली थी... कार भारत की सीमा पार कर गई

27 जनवरी,1941 को काबुल पहुँच गए, वहीं सराय में उन्हें सूचना मिली...

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
16-30 सितम्बर, 2022
(11 सितम्बर को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

(आश्विन शुक्ल 6 से कार्तिक कृष्ण 6 तक, वि.सं. 2079)
1 से 15 अक्टूबर, 2022

जन्म दिवस

2 अक्टूबर (1869) – महात्मा गांधी जयंती
2 अक्टूबर (1904) – लाल बहादुर शास्त्री जयंती
आश्विन शु.8 (3 अक्टू.)– लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ जयंती
4 अक्टूबर (1857) – श्यामजी कृष्ण वर्मा जयंती
आश्विन शु.10(5 अक्टू.)– श्रीमन्त शंकर देव जयंती (सन्1449)
– मध्वाचार्य जयंती (वि.1376,यु.4421)
– हेमचन्द्र विक्रमादित्य जयंती (सन् 1501)
6 अक्टूबर (1893) – वैज्ञानिक मेघनाद साह जयंती
7 अक्टूबर (1907) – दुर्गा भाभी जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

आश्विन पूर्णिमा (9 अक्टू.)– वाल्मीकि जयंती
9 अक्टूबर (1907) – भैयाजी दाणी जयंती
9 अक्टूबर (1877) – गोपबन्धु दास जयंती
कार्तिक कृ.2 (11 अक्टू.)– गुरु रामदास जयंती (प्राचीन मत)
14 अक्टूबर (1884) – लाला हरदयाल जयंती
15 अक्टूबर (1931) – डॉ.अब्दुल कलाम जयंती
15 अक्टूबर (1882) – महात्मा आनन्द स्वामी जयंती

महत्वपूर्ण घटनाएं

4 अक्टूबर (1857) – जयमंगल पाण्डे व नादिर अली की शहादत
15 अक्टूबर (1857) – मुम्बई में मंगल गाडिया और सैयद हुसैन को फाँसी

आश्विन शु. 10(5अक्टू.)– लाचित बड़फूकन की मुगलों पर विजय (1670)
– दिवेर युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय (1582)
– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्थापना दिवस (1925)
– राष्ट्र सेविका समिति का स्थापना दिवस (1936)

सांस्कृतिक पर्व

आश्विन शु. 11 (6 अक्टू.)– श्रीराम-भरत मिलाप
8 अक्टूबर – वायु सेना दिवस
9 अक्टूबर – विश्व डाक दिवस

आश्विन शु. 8 (3 अक्टू.)– सरस्वती पूजन
आश्विन शु. 10 (5 अक्टू.)– विजयादशमी (दशहरा)

पंचांग- आश्विन (शुक्ल-पक्ष)

युगाब्द-5124, वि.सं.-2079, शाके-1944
(26 सितम्बर से 9 अक्टूबर,2022)

शारदीय नवरात्र प्रारम्भ -26 सितम्बर, **चतुर्थी व्रत**-29 सितम्बर, **छठ पूजन व मेला** (आमेर-जयपुर)-1 अक्टूबर, **दुर्गाष्टमी**-3 अक्टूबर, **महानवमी** (शारदीय नवरात्र)-4 अक्टूबर, **विजयादशमी**,-5 अक्टूबर, **पापांकुशा एकादशी**- 6 अक्टूबर, **पंचक प्रारम्भ**-6 अक्टूबर (प्रातः 8.28 बजे) **प्रदोष व्रत** -7 अक्टूबर, **सत्यपूर्णिमा व्रत** (शरद पूर्णिमा)-9 अक्टूबर, **कार्तिक स्नान प्रारंभ**-9 अक्टूबर

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 26-27 सितम्बर **कन्या** राशि में, 28-29 सितम्बर **तुला** राशि में,30 सितम्बर व 1 अक्टूबर नीच की राशि **वृश्चिक** में, 2 से 4 अक्टूबर **धनु** राशि में, 5-6 अक्टूबर **मकर** राशि में , 7-8 अक्टूबर **कुंभ** राशि में तथा 9 अक्टूबर को **मीन** राशि में गोचर करेंगे।

आश्विन शुक्ल पक्ष **वक्री गुरु** व **वक्री शनि** क्रमशः यथावत मीन व मकर राशि में बने रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** और **केतु** भी क्रमशः मेष व तुला राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** और **शुक्र** यथावत कन्या राशि में रहेंगे। **मंगल** यथावत वृष राशि में तथा **वक्री बुध** कन्या राशि में रहते हुए 2 अक्टूबर को दोपहर 2.35 बजे मार्गी होंगे।

(**विशेष**-शुक्र 1 अक्टूबर को प्रातः 8:30 बजे अस्त होकर 24 नवम्बर को रात 12:15 बजे उदय होगा)

जन्मदिवस पर शत शत नमन

प्रसिद्ध क्रांतिकारी
श्यामजी कृष्ण वर्मा
4 अक्टूबर

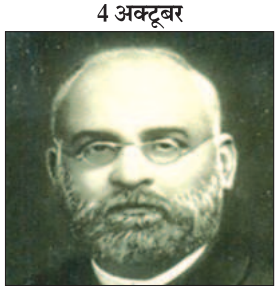

(1857-1930)

महान खगोल वैज्ञानिक
मेघनाद साह
6 अक्टूबर

(1893-1956)

मध्य भारत में संघकार्य को विस्तार देने वाले
भैया जी दाणी 9 अक्टूबर

(1907-1965)

चौथे गुरु
गुरु रामदास
कार्तिक कृ.2(11अक्टूबर)

(1534-1581)

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 सितम्बर, 2022 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में _____
_____
_____